Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

छ्देण पलेतिमा पया।

माया और मोह से ढंका हुआ प्राणी स्वेच्छा से विभिन्न गतियों में पर्यटन करता है ।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 46 • 22 - 28 अगस्त, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 20-08-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का आध्यात्मिक शुभारम्भ

महासभा है तेरापंथ समाज की रीढ़ : आचार्यश्री महाश्रमण

३७० क्षेत्र और १३०० से अधिक संभागियों को आचार्यश्री ने प्रेम, सौहार्द और एकता की दी प्रेरणा

छापर, चूरू, १३ अगस्त, २०२२

७४ वर्षों बाद छापर की धरा पर चतुर्मास कर रहे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान देदीप्यमान महासूर्य, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के ज्ञान प्रकाशों से छापर की फिजा तो बदली ही थी। शनिवार को जब जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आयोजित तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग लेने के लिए देश-विदेश के लगभग ३७० क्षेत्रों के १३०० से अधिक प्रतिनिधि छापर में अपने आराध्य के सान्निध्य में पहुंचे तो चतुर्मास प्रवास स्थल पूरी तरह जनाकीर्ण बन गया। अपने गुरु के प्रति आस्था व विश्वास लेकर पहुंचे महासभा के पदाधिकारियों व सभा/उपसभाओं के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन के शुभारम्भ के संदर्भ में प्रातः ८:१५ बजे आचार्यश्री के प्रवास कक्ष में ही उपस्थित होकर आचार्यश्री से मंगलपाठ का श्रवण किया तो वहीं मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री की अमृतवाणी से भी लाभान्वित हुए। आचार्यश्री ने भगवती सूत्राधारित अपने प्रवचन, कालूयशोविलास के उपरान्त उपस्थित संभागियों को पावन पाथेय प्रदान करते हुए 'संघे शक्ति कलियुगे' का मंत्र प्रदान किया।

तदुपरान्त आचार्य कालू महाश्रमण समवसरण आज संभागियों की उपस्थिति से मानों जनाकीर्ण बन गया था। आचार्यश्री ने उपस्थित समस्त श्रद्धालुओं को भगवती सूत्राधारित अपने मंगल प्रवचन से पावन पाथेय प्रदान करते भगवान महावीर और भगवान पार्श्वनाथ के काल के व्यवस्थाओं में कुछ अंतरों का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान पार्श्वनाथ के समय में चार महाव्रत थे और भगवान महावीर के समय में ब्रह्मचर्य सहित पांच महाव्रत थे। प्रतिक्रमण तो साधुओं को सुबह-शाम करनी अनिवार्य है तो श्रावकों के लिए पाक्षिक प्रतिक्रमण करने का विधान है। पुर्युषण पर्व के दिन तो श्रावकों भी प्रायः प्रतिदिन प्रतिक्रमण करने का प्रयास करना चाहिए। संवत्सरी तो मानों उसका शिखर दिन है। (शेष पृष्ठ ५ पर)

शक्ति संपन्न होकर भी क्षमाशीलता का गुण रखना विशेष बात : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ११ अगस्त, २०२२

आज श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी और पूर्णिमा। हाजरी का दिन और रक्षाबंधन का पर्व। आचार्य भिक्षु के परंपरा पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया है कि भंते! श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए अक्रोधत्व, अमानत्व, अमायात्व, अलोभत्व ये प्रशस्त हैं? गौतम के नाम उत्तर दिया गया कि हाँ गौतम अक्रोधत्व, अमानत्व, अमायात्व और अलोभत्व श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिए प्रशस्त है।

एक साधु को कैसा होना चाहिए, इस संदर्भ में अनेक बातें बताई गई हैं, इनमें चार चीजें और बताई गई हैं, जो साधु के लिए प्रशस्त हैं, हितकर हैं। साधु को गुस्से से बचकर के रहना चाहिए। साधु छठे गुणस्थान में हैं, कषायमंदता कम है, कभी गुस्सा भी आ जाता है। प्रमाद हो सकता है, पर वो आदर्श नहीं है, कमजोरी है। साधु तो प्रसन्न ही अच्छा लगता है।

हमारा आक्रोश भाव न केवल हमारी चेतना को उतप्त बनाने वाला होता है, चेहरे को भी विकृत कर देने वाला हो सकता है। साधु तो शांतिमय रहे। परस्पर व्यवहार अक्रोधपूर्ण, सहयोगपूर्ण हो। समुचित विनयपूर्ण हो। गुस्सा एक बाधक तत्त्व है, जो हमारी परस्परत्व को कटु बनाने वाला सिद्ध हो सकता है। (शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 अगस्त, 2022

✦ *हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जैन शासन का महत्त्वपूर्ण अंग है–सामायिक : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १२ अगस्त, २०२२

युवा मनीषी, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया–भगवती सूत्र में कहा गया है कि अतीत में भगवान पार्श्वनाथ तेवीसवें तीर्थंकर के रूप में विराजमान थे। जैन आगमों में २४-२४ तीर्थंकरों की व्यवस्था बताई गई है। अवसर्पिणी काल, उत्सर्पिणीकाल ये कालचक्र के दो विभाग हैं।

अवसर्पिणी काल में अवरोहण होता है और उत्सर्पिणी काल में आरोहण होता है। जैसे घड़ी में बारह अंक होते हैं, वैसे ही कालचक्र में १२ आरे होते हैं। जैसे घड़ी में १ से ६ अंक तक अवरोहण होता है वैसे ही अवसर्पिणी काल में भी यह कुछ ह्रास होता है। जैसे आदमी का आयुष्य, अवगाहना न्यूनता की ओर आती है।

अवसर्पिणी काल के प्रथम आरे में तीन पल्योपम का, यौगलिकों का और तीन कोस अवगाहना होती है। वह घटते-घटते कम होते जाते हैं। आयुष्य और अवगाहना में ह्रास होता है। जैसे ६ के बाद घड़ी की सुइया आरोहण करती है, वैसे ही उत्सर्पिणीकाल शुरू होगा, उसमें भी छः आरे होंगे। जिस गति से ह्रास हुआ था, उसी गति से विकास होगा। वह चलते-चलते वापस वही तीन पल्योपम का आयुष्य और वही तीन कोस अवगाहना हो जाएगी। फिर ह्रास, फिर विकास, यह हमारी सृष्टि में क्रम चलता रहता है।

इस काल चक्र के हर अवसर्पिणी में और हर उत्सर्पिणी में २४-२४ तीर्थंकर भरत

क्षेत्र में होते हैं। यह शाश्वत क्रम है कि एक कालचक्र में ४८ तीर्थंकर होते रहते हैं। वर्तमान में अवसर्पिणी कालचक्र चल रहा है।

पूज्यप्रवर ने भगवान पार्श्व और भगवान महावीर के समय का उल्लेख करते हुए फरमाया कि सामायिक ही आत्मा है। व्यवहार में सावद्य विरति सामायिक है। साधु के तो जीवन भर की सामायिक होती है। गृहस्थ के एक मुहर्त की सामायिक होती है। साधु के तो तीन करण तीन योग से सावद्य विरति होती है, पर श्रावक के सामान्यतया दो करण-तीन योग से त्याग होते हैं। साधु के संपूर्ण सामायिक है, श्रावक के आंशिक सामायिक है। एक पास पूर्ण मोदक है और एक के पास मोदक का टुकड़ा है, पर स्वाद दोनों का एक जैसा ही आएगा।

सामायिक अपने आपमें एक है, परंतु भाषा का अंतर है। भगवान महावीर के समय भगवान पार्श्व की परंपरा भी चल रही थी, उनके भी साधु होते थे। दोनों परंपरा के साधु आपस में मिलते तो जिज्ञासा होती कि हम साधु हैं, फिर ये अंतर क्यों?

हमारे उपकरण या श्रावक के उपकरण सामायिक नहीं है, सामायिक तो आत्मा में हैं। त्याग है, वो आत्मा में है। जैन शासन का महत्त्वपूर्ण अंग है–सामायिक। समता धर्म है, विषमता पाप है, यही जैन धर्म का सार है। सामायिक एक आचरणीय धर्म है।

शनिवार की शाम ७ से ८ बजे के बीच यथासंभव जैन श्वेतांबर तेरापंथ के लोग सामायिक का प्रयोग करें, अच्छा है। जहाँ अनुकूलता हो, स्थान हो वहाँ कर सकते हैं। सामायिक एक धार्मिक अनुष्ठान है। सावद्य प्रवृत्ति का त्याग है। सावद्य यानी पाप सहित प्रवृत्ति-योग का त्याग होता है। उपकरण तो सहायक तत्त्व है। सामायिक में स्वाध्याय करें। प्रवचन सुनने से दोनों कार्य हो जाते हैं।

कालूयशोविलास काव्य ग्रंथ का विवेचन करते हुए फरमाया कि पूज्य कालू गणी वि०सं० १९७३ का चतुर्मास करने जोधपुर पधार रहे हैं। २४ साधु और २८ साध्वियाँ साथ में हैं। चतुर्मास पूर्ण कर पूज्य लाडनूं होते हुए बीदासर में माजी महाराज को दर्शन दिराने पधारते हैं।

वि०सं० १९७४ का चतुर्मास की महर सरदारशहर पर हो रही है। २५ संत और २४ साध्वियाँ साथ में हैं। उस समय वर्षा का उत्पात सा हो गया था। गुरुदेव के स्वास्थ्य में कठिनाई आ रही है। उससे पहले मुनि मगनलालजी के स्वास्थ्य में भी व्याधि उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ० अश्विनी मुखर्जी के उपचार से दोनों स्वस्थ हो जाते हैं। सरदारशहर में एक इटालियन विद्वान डॉ० देसीवेरी आते हैं, गुरुदेव के दर्शन करते हैं। सरदारशहर से पूज्य गुरुदेव चूरू पधारते हैं वहाँ एक इतिहास की, विकास का क्रम बन रहा है।

महासभा के पदाधिकारियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पटना के तनसुखलाल जैन ने अपनी पुस्तक-यात्रा स्वयं से स्वयं तक श्रीचरणों में अर्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। मुनि राजकुमार जी ने तपस्या की प्रेरणा दी।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अनेक क्रियाएँ करता है। जीवन में सबसे अधिक क्रिया–सोचने की होती है। जीवन यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण घटक है–चिंतन। सोचना एक कला है। चिंतन सकारात्मक हो। सफलता का महत्त्वपूर्ण घटक है–सकारात्मक सोच। सकारात्मक सोच रीढ़ की हड्डी के समान है। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री अल्का बेद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुजार जी ने समझाया कि दीक्षा में अंतराय देने से वे कर्म आगे उदय में आ सकते हैं।

शपथ ग्रहण समारोह

अग्रसेन भवन, दिल्ली।

तेरापंथी सभा, पश्चिम विहार के मनोनीत अध्यक्ष सुशील जैन व उनकी पूरी टीम का शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तेयुप, दिल्ली की तरफ से नव मनोनीत अध्यक्ष सुशील जैन व उनकी टीम को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। संस्कारकों ने आशीर्वाद मंत्र का वाचन करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

इस कार्यक्रम में महासभा से कैलाश जैन, कमल बैंगाणी, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष नत्थूराम जैन, प्रदीप संचेती, दिल्ली सभा के निवर्तमान महामंत्री डालमचंद बेद, दिल्ली सभा के मंत्री संजीव जैन, रोहिणी सभा के अध्यक्ष विजय जैन, पश्चिम विहार सभा के निवर्तमान अध्यक्ष श्यामलाल जैन सहित अन्य सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

शक्ति संपन्न होकर भी क्षमाशीलता का गुण रखना...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसी प्रकार अमानत्व। मान-अहंकार नहीं, घमंड नहीं। ज्ञान का घमंड न हो। जो स्वयं में कलाएँ हैं, उनका यथोचित उपयोग करें। शक्ति होने पर भी क्षमाशीलता रखना, अच्छी-विशेष बात होती है। बड़ों को वंदना करना भी अमानत्व है। तीसरी बात है–अमायात्व। साधु को ऋजु-सरल रहना चाहिए, छल-कपट नहीं। सरलता होने से जीवन में शुद्धता रह सकती है। सरलता के साथ गंभीरता भी रहे।

चौथी बात बताई है कि साधु के लिए अलोभत्व प्रशस्त है। लोभ-लालसा ज्यादा नहीं। कोई भी चीज हो, बहुत बढ़िया के प्रति लालसा न रहे, चीज उपयोगी होनी चाहिए, कीमती की लालसा नहीं रखनी चाहिए। सादगी साधु जीवन के लिए अच्छी है। ये चार चीजें साधु में हैं, तो उसकी आत्मा प्रशस्त है। ज्ञान का विकास करें।

वक्तृत्व व गायन कला का विकास हो। कला का भी विकास हो। उनमें आगे बढ़ें। हमारे कषाय, क्रोध, मान, माया, लोभ अविकास की तरफ जाएँ, प्रतनूं बनें। तो साधु जीवन अच्छा रह सकता है। सेवा सापेक्ष वालों की सेवा अच्छी कर सकें, यह विकास हो। हम धर्म की, शासन की, आत्मा की सुषमा को बढ़ाने का प्रयास करें।

चतुर्दशी-हाजरी का वाचन

परम पावन ने हाजरी का वाचन करते हुए आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त मर्यादाओं को विस्तार से समझाया।

छोटे संतों में ज्ञान का विकास होते रहना चाहिए। जिनके ज्ञान हो गया वे सेवा करें। ज्ञान का व अपनी क्षमताओं का अच्छा उपयोग करें। आपस में प्रेरणा ले-दे सकते हैं। हमारी मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहते हुए शासन की सेवा करते रहें। व्याकरण-संस्कृत भाषा का विकास हो। लेख पत्र का वाचन मुनि अर्हम् जी, मुनि रत्नेश जी, मुनि ऋषि जी व मुनि खुश कमार जी ने किया। पूज्यप्रवर ने प्रेरणा के साथ दो-दो कल्याणक बख्शीष करवाए। सामूहिक लेख पत्र का वाचन हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी को पद पर आए तीन माह हो गए हैं। आपका भी अच्छा विकास होता रहे। आज रक्षा बंधन भी है। मुनि कुमार श्रमण जी, मुनि विश्रुत कुमार जी को भी रक्षा बंधन पर बहनों को ज्ञानरूपी सेवा देने-लेने की प्रेरणा दी।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि गुरुदेव! मुझे कुछ सोचना नहीं पड़ता है, जो विचार आते हैं, गुरुदेव को निवेदन कर देती हूँ। संवाद हो या समस्या श्रीचरणों में निवेदन कर देती हूँ। निवेदन कर निश्चिंत हो जाती हूँ और आपका मार्गदर्शन मिल जाता है, मुझे तो उसकी क्रियान्विति करनी होती है। मैं आपके आशीर्वाद पर ही आगे बढ़ रही हूँ। आपके मार्गदर्शन से मैं आलोक प्राप्त करती रहूँ।

आचार्यश्री महाश्रमण व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा ने अपनी भावना श्रावक समाज के सामने प्रस्तुत की।

ममता भंसाली ने ९ की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

राजा हो या रंक सभी को भोगने पड़ेंगे अपने कर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला बनाती है भावी पीढ़ी को संस्कारवान

ताल छापर, १४ अगस्त, २०२२

चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में कहा गया है कि भगवान महावीर जो ढाई हजार वर्ष से भी अधिक वर्ष पहले सदेह इस दुनिया में विराजमान थे। उनका परिवार था। उनके एक अन्तेवसी शिष्य जिनके लिए कहा गया है—भगवान गौतम! वे एक दिन भगवान महावीर को वंदना-नमस्कार करते हैं, प्रश्न पूछते हैं।

आगम के सूत्र से हमें पता चलता है कि किस प्रकार प्रश्न पूछना? पहले वंदना-नमस्कार कर फिर प्रश्न पूछना। प्रश्न थोड़ा तात्त्विक भी है और सामान्य भी है। प्रश्न यह पूछा कि भंते! सेठ है कोई, निर्धन है, कोई राजा है--- इन सबके अप्रत्याख्यान क्रिया एक समान होती है क्या?

साधु के तो अविरति छूट जाती है। गृहस्थों के देश विरति रहती है। उत्तर दिया गया कि हाँ गौतम श्रेष्ठी, निर्धन, राजा, रंक सबके अप्रत्याख्यान क्रिया समान होती है। फिर पूछा गया कि किस अपेक्षा से समान होती है। उत्तर दिया गया गौतम अविरति की अपेक्षा से। अविरति सबमें होती है। सामान्यतया कथन चलता है कि पाप किसी का बाप नहीं, जो करेगा उसको फल भोगना पड़ेगा।

भगवती सूत्र में यहाँ दो विरोधी युगल बताए गए—रंक और राजा। कर्म बंध के क्षेत्र में सब एक समान हैं, यह निष्कर्ष यहाँ निकलता है। धर्म के क्षेत्र में भी सब एक समान है। जो करेगा उसको फल मिलेगा। यह एक समानता की बात है। अध्यात्म के क्षेत्र की ये समानता उच्च कोटि की बात है। कर्म के क्षेत्र में कोई पक्षपात नहीं है। न्यायालय में पक्षपात हो सकता है। पर अध्यात्म-कर्म के क्षेत्र में नहीं। कर्मवाद का निष्पक्ष न्यायालय है।

कर्मवाद को कोई डर नहीं है, जैसा कर्म किया है, वैसा फैसला देना है। कर्म में चेतना नहीं है, पर फल अपने आप मिल जाता है। लोकतंत्र-राजतंत्र में न्यायपालिका एक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है। न्यायपालिका में वही सिद्धांत अप्रत्याख्यानी वाला हो। न्यायाधीश को भी लोभ और भय से दूर रह करके न्याय देना अपेक्षित होता है। न्यायालय में भी निष्पक्षता हो।

न्यायालय में वादी-प्रतिवादी, वकील भी झूठ बात न करे। न्याय करने में थोड़ी देरी तो भले हो जाए पर अन्याय किसी के साथ नहीं होना चाहिए। देर भले हो पर अंधेर न हो तो न्यायालय महिमा मंडित रह सकता है। भारत में लोकतंत्र अच्छी प्रकार से चल रहा है। सबको समान अधिकार है। भारत में कितने संत, ग्रंथ हैं, पंथ हैं फिर भी प्रक्रिया कितनी सही चल रही है। कितना उपदेश, प्रवचन होता है।

भारत में धर्म का प्रभाव है, तो धर्म निर्पेक्षता का भी प्रभाव है। वर्तमान की लोकतंत्र प्रणाली में मुझे तो काफी सुंदरता लगती है। कोई कमी है, तो उसमें भी विकास हो। भारत और गरिमा वाला देश बने।

आचार्यप्रवर ने कालू यशोविलास के प्रसंगों को समझाते हुए फरमाया कि पूज्य कालूगणी का पंडित रघुनंदनजी के प्रति किस तरह मन हो गया। यतिजी ने पंडितजी एवं कालूगणी दोनों को बात करने के लिए तैयार किया था। फिर तो पंडितजी कालूगणी के भक्त हो गए। सेवा देने के लिए तैयार हो गए।

आज ज्ञानशाला दिवस है। कई ज्ञानशालाएँ पूज्यप्रवर की सेवा में आ गईं। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि आदमी के जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। आज दुनिया में कितने-कितने संस्थान ऐसे हैं, जिनके माध्यम से ज्ञान का आदान-प्रदान होता है। कितने-कितने विद्यार्थी विद्या के क्रम से जुड़े हैं। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी बोलते थे कि विद्यालय की शिक्षा बुरी नहीं है, उसमें कुछ अपर्याप्तता हो सकती है। साथ में संस्कारों की बात जुड़ जाए।

जीवन विज्ञान के माध्यम से जीने का विज्ञान भी विद्यार्थियों को मिले तो और ज्यादा परिपूर्णता आ जाएगी शिक्षा के उपक्रम में। हमारे यहाँ यह ज्ञानशाला का उपक्रम चल रहा है। गुरुदेव तुलसी के समय से शुरू हुआ यह क्रम निरंतर चलता आ रहा है। ज्ञानशाला में भी पहले से निखार आया है। जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा और स्थानीय सभाओं के तत्त्वावधान में यह ज्ञानशाला का उपक्रम चलता है। यह एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है—बाल पीढ़ी को तैयार करना। उनमें अच्छे संस्कार होंगे तो युवा पीढ़ी अच्छी होगी। मूल में ही ठीक कर दो तो आगे कमी नहीं रहेगी। बच्चे मूल हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि समाज के प्रबुद्ध लोगों ने समाज को संगठित करने के लिए कार्यकर्ताओं को संगठित करने का चिंतन आया और जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा को जन्म दे दिया। आचार्यों द्वारा प्रदत्त अध्यात्म युक्त मार्गदर्शन इस संस्था को आगे बढ़ा रहा है। महासभा का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है—ज्ञानशाला। ज्ञानशाला के माध्यम से संस्कारित बाल पीढ़ी का निर्माण हो रहा है।

महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक सोहनलाल चोपड़ा, छापर ज्ञानशाला, सुजानगढ़ ज्ञानशाला आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अपने समय को व्यर्थ कार्य में नहीं अपितु अच्छे कार्यों में लगाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ६ अगस्त, २०२२

समयज्ञ, क्षेत्रयज्ञ, आत्मयज्ञ, आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन में छः द्रव्यों का निरूपण हुआ है, जो काफी प्रसिद्ध है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय।

हमारी दुनिया में पदार्थ दो प्रकार के होते हैं, एक तो वो जो भार युक्त होते हैं। दूसरे वे जो भार हीन होते हैं। प्रश्न यह किया गया कि भंते! ये धर्मास्तिकाय है, वह गुरु है या लघु है या गुरु-लघु है या अगुरु लघु है? गौतम के नाम उत्तर दिया गया कि धर्मास्तिकाय न तो गुरु होता है, न लघु होता है। न गुरु-लघु होता है, किंतु अगुरु लघु होता है। वह न भारी है, न हल्का है। भारहीन है। इसमें कोई भार नहीं है।

एक बात स्पष्ट है कि जो अमूर्त्त होगा, उसमें भार होगा भी कैसे? उसमें कोई वर्ण, गंध, रस, स्पर्श नहीं है। भार उसी पदार्थ में होगा, जिसमें स्पर्श हो। रस, गंध और वर्ण हो। एक पुद्गलास्तिकाय हो ऐसा है, जिसमें स्पर्श, रस, गंध और स्पर्श होता है। बाकी के जो द्रव्य हैं, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल और जीवास्तिकाय इनमें कोई स्पर्श, रस, गंध और वर्ण नहीं होता है। ये अमूर्त्त है। ये पाँचों न गुरु हैं, न लघु हैं, न गुरुलघु हैं। ये तो अगुरु लघु होते हैं। इनमें भार नहीं हो सकता है।

निश्चय में ऐसा कोई पदार्थ नहीं होता जो एकदम भारी है, हल्का नहीं होता। हल्का और भारी सापेक्ष है। शरीर रहित शुद्ध जीव है, उसमें भी कोई भार नहीं वो भी अगुरु लघु है।

समय भी अगुरु लघु होता है। ये कर्म जो लगे हुए हैं, वे अगुरु लघु है। जो चतुर्स्पशी होता है, वो अगुरु लघु होता है। आठों स्पर्श वाला गुरु लघु होता है। धर्मास्तिकाय ऐसा द्रव्य है, जो संपूर्ण लोक में फैला हुआ है। धर्मास्तिकाय हमारे गति क्रिया में बड़ा सहायक होता है। उसका बड़ा उदासीन भाव है। स्थिरता के लिए अधर्मास्तिकाय का सहयोग लेना होता है। स्थान देने वाला आकाशास्तिकाय है। काल समय के रूप में वर्तना गुण वाला है। पुद्गलास्तिकाय तो हमारे जीवन में निरंतर काम आते हैं।

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय तो हमारे परोपकारी हैं, पर जीवास्तिकाय, परस्पर परोपकारी है। एक-दूसरे प्राणी प्राणी का सहयोग करते हैं। ये धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय या पुद्गलास्तिकाय पर सहयोग नहीं करते हैं। ये छः द्रव्य ही हमारी सृष्टि है, लोक है। केवल आकाशास्तिकाय है, तो अलोक है। इन प्रश्नों से हमें छः द्रव्यों के विषय में जानकारी मिल जाती है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 अगस्त, 2022

✦ *चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बोते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

परचम केसरिया शक्ति का

राजसमंद, कांकरोली।

अभातेममं के तत्त्वावधान में साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेममं कांकरोली के बैनर तले 'परचम केसरिया शक्ति का' दो चरणों में मनाया गया। पहले चरण में कन्या सुरक्षा बेंच का उद्घाटन किया गया और दूसरे चरण में कार्यशाला का आयोजन किया गया। अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया की अध्यक्षता में इसका आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुआ। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। कांकरोली अध्यक्षा इंद्रा पगारिया ने सभी का स्वागत किया।

साध्वी मंजुयशा जी ने कार्यक्रम के तहत महिलाओं की शक्ति पर आत्मचिंतन करने व अधिक मजबूत बनने की प्रेरणा प्रदान की। महिला पुलिस अधिकारी संगीता का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष प्रकाश सोनी, तेयुप के अध्यक्ष निखिल कच्छारा व मंत्री दिव्यांश कच्छारा, टीपीएफ के मंत्री आर०के० जैन, कन्या मंडल संयोजिका, सह-संयोजिका एवं केसरिया साड़ी में मंडल की सभी बहनें उपस्थित रही।

परचम केसरिया शक्ति का रंगोली भी कन्या मंडल व महिला मंडल की बहनों द्वारा बनाई। मंत्री मनीषा कच्छारा व नीता सोनी ने संयुक्त रूप से संयोजन किया। सरोज चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया।

स्नेहम् प्रोजेक्ट पूर्ण

नालासोपारा (मुंबई)।

अभातेममं के निर्देशानुसार मुंबई महिला मंडल के तत्त्वावधान में नालासोपारा महिला मंडल द्वारा स्नेहम प्रोजेक्ट पूर्ण किया गया। संकल्प स्पेशल स्कूल, लिंक रोड नालासोपारा ईस्ट में पधारे। यहाँ ३५ से ४० बच्चे पढ़ाई करते हैं। विशेष अतिथि के रूप में मुंबई महिला मंडल की अध्यक्षा रचना हिरण, सहमंत्री संगीता चपलोत पधारे। संयोजिका वनीता सोलंकी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। महिला मंडल अध्यक्षा ने अपने भाव व्यक्त किए।

मुंबई के विशेष सहयोगी अंजु छाजेड़ की उपस्थिति रही। वहाँ पर एक वॉटर प्यूरीफायर फिल्टर मशीन दिया गया। डॉ० अनीता सिंह ने विचार रखे। संकल्प स्कूल के बच्चों ने महिला मंडल को भेंट में उनके हाथ से सजाए हुए सुंदर दीपक दिए। सभी का आभार सह-संयोजिका वर्षा धाकड़ ने किया। इस प्रोजेक्ट में २५ से २८ बहनों की उपस्थिति रही।

महिला मंडल के विविध आयोजन

प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी आदि के सान्निध्य तथा 'प्रतिक्रमण कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। प्रेरणा गीत से महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा ने सभी का स्वागत किया। संरक्षक पुष्पा देवी बुरड़ ने प्रतिक्रमण के प्रकारों के बारे में बताया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने प्रतिक्रमण क्या है? क्यों करना चाहिए? इसके लाभ क्या हैं? इन सबके बारे में विस्तार से बताया तथा सबको नया प्रतिक्रमण सीखने की प्रेरणा दी। बहनों की उपस्थिति सराहनीय रही। आभार ज्ञापन किया उपाध्यक्ष अरुणा डोसी ने। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री सुमन कोठारी ने किया।

कन्या सुरक्षा स्तंभ का उद्घाटन

नोएडा।

तेममं द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रथम बार किसी राष्ट्रीय अध्यक्ष का आगमन होने से नोएडा में हर एक के चेहरे पर मुस्कान की लहर थी। राष्ट्रीय अध्यक्षा के अपनी टीम के साथ सावन महीने में पदार्पण पर केसरिया छतरियों एवं हस्तनिर्मित माला के साथ स्वागत किया।

उसके पश्चात कन्या सुरक्षा योजना के अंतर्गत आर्ष कन्या गुरुकुल में कन्या सुरक्षा स्तंभ का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ संरक्षिका शायर बैंगानी एवं कार्यसमिति सदस्यों के साथ रिबन खोलकर किया। पूर्व केंद्रीय मंत्री वर्तमान वर्तमान सांसद डॉ० महेश शर्मा को नीलम सेठिया ने कन्या सुरक्षा योजना के बारे में जानकारी दी।

उद्घाटन कार्यक्रम संयोजिका डॉ० आरती कोचर एवं कुसुम बैद रही एवं आभार मंत्री दीपिका चोरड़िया ने किया।

कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, बालोतरा के तत्त्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव ७५वें स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में कन्या सुरक्षा सर्कल पर ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण नगर सभापति सुमित्रा वेद मेहता, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, पूर्व चेयरमैन प्रभा सिंघवी, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा द्वारा किया गया। राष्ट्रगान का संगान किया गया तथा ध्वज को सलामी दी गई।

राजूल नेमी परिसंवाद का आयोजन

गंगाशहर।

तेममं द्वारा राजूल नेमी परिसंवाद का आयोजन किया गया। सान्निध्य एवं प्रेरणा साध्वी कीर्तिलता जी की रही। साध्वी पूनमप्रभाजी का विशेष सहयोग रहा। महिला मंडल की १८ बहनों ने इस परिसंवाद में भाग लिया।

अध्यक्ष ममता रांका ने बताया कि सभी भाग लेने वाली बहनों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में लगभग २०० जनों की उपस्थिति रही। साध्वी कीर्तिलता जी ने बताया कि आज के युग में राजूल नेमि की कहानी सबको पता होनी चाहिए, ताकि सबको पता चले कि कैसे नेमि कुमार ने पशुओं की हत्या देखकर शादी से मुख मोड़ लिया और राहूल ने कैसे नेमि कुमार का साथ हर परिस्थिति में निभाया। अंत में संयम जीवन धारण किया। कार्यक्रम में कन्या मंडल का सहयोग रहा।

अमृत महोत्सव कार्यक्रम

नोएडा।

अभातेममं द्वारा निर्देशित आजादी का अमृत महोत्सव ७५वें स्वतंत्रता दिवस पर तेममं, नोएडा द्वारा आर्ष कन्या गुरुकुल में कन्या सुरक्षा स्तंभ पर तिरंगा फहराने के साथ राष्ट्रगान गाया गया।७५ की संख्या को मानव शृंखला बनाकर दर्शाया गया। सर्कल के चारों तरफ लहराते हुए तिरंगे के साथ तिरंगा यात्रा की। तेममं अध्यक्षा कविता लोढ़ा व मंत्री दीपिका चोरड़िया द्वारा आर्ष कन्या गुरुकुल की अधिष्ठात्री सीमा चौधरी को महिला मंडल गणवेश को भेंट कर सम्मानित किया गया।

आभार आर्ष कन्या गुरुकुल के संस्थापक आचार्य जैनेंद्र शास्त्री और उनकी धर्मपत्नी सीमा चौधरी का जिन्होंने कार्यक्रम आयोजित करने का सुअवसर प्रदान किया।

रक्षाबंधन पर दें आध्यात्मिक उपहार

साहुकारपेट।

रक्षाबंधन त्योहर का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में महिला मंडल के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि रक्षाबंधन सुरक्षा से जुड़ा एक रिश्ता है। भावनात्मक संवेदना से जुड़ा हुआ पवित्र संबंध है। यह पर्व आत्म सुरक्षा का पवित्र संदेश प्रदान करता है। भाई को अपने दायित्व का बोध कराता है।

चतुर्दशी के अवसर पर परिषद में हाजरी मर्यादा का वाचन करते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि मर्यादा का पालन भी आत्म-सुरक्षा का महान उपक्रम है। आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाएँ हमारा सुरक्षा कवच हैं। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

तेममं द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जप अनुष्ठान का उपक्रम रखा गया। राकेश परमार ने गीत का संगान किया।

अपने समय को व्यर्थ कार्य में नहीं अपितु...

(पृष्ठ ३ का शेष)

इन छः में अंतिम स्थान काल को दिया गया है कि काल क्या है, इसको भगवती सूत्र में अंत में क्यों बताया गया है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि पहले के पाँच में अस्तिकाय जुड़ा है, पर समय में अस्तिकाय नहीं जुड़ा है। इसलिए अस्तिकाय को पहले ले लिया गया है। एक शब्द आता है—पंचास्तिकाय। प्रदेशों का समूह यानी अस्तिकाय होता है। काल में प्रदेश नहीं होते हैं, वह तो वर्तमान है, बीतता रहता है। इसलिए समय इन पाँचों से अलग है।

कार्य करने के लिए स्थान और समय दोनों चाहिए। समय भी जरूरी द्रव्य है, तभी हमारा काम हो सकता है। हम समय को व्यर्थ जाने से बचाएँ। हम समय का सदुपयोग करें।

कालूयशोविलास का विवेचन करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि कालूगणी, ब्यावर में विराजमान है। आगे मेवाड़ की यात्रा हो रही है, छोटे-बड़े गाँवों का स्पर्श करते हुए गंगापुर पधारते हैं। वहाँ मर्यादा-महोत्सव करवाया है। १५६ साधु-साध्वियों का संगम हुआ है। वहाँ से भीलवाड़ा में एक माह का प्रवास हो रहा है। मेवाड़ पर महामेघ की वर्षा हो रही है। अनेक क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए वि०सं० १९७२ का चतुर्मास करवाने उदयपुर पधारते हैं। वहाँ मालवा के लोग पूज्यकालूगणी से मालवा पधारने के लिए छः सौ लोग आते हैं। अर्ज कर रहे हैं।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि जीवन की महान उपलब्धि है—मंगलभावना और मैत्री भावना। नमस्कार महामंत्र है वह मंगल की भावना का महामंत्र है। नमस्कार महामंत्र के एक-एक अक्षर से जो तरंगे निकलती हैं, वो व्यक्ति की अपवित्रता को भी पवित्रता में बदल देती है। यहाँ महासती दमयंती और महर्द्धिक देव के प्रसंग से समझाया कि नमस्कार महामंत्र के जप से जीव कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। नमस्कार महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला सब मंगलों में सर्वोत्तम मंगल है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि गुरु का जब विश्वास शिष्य को प्राप्त होता है, तो उसे कोई खतरा नहीं होता है।

✦ *भावक्रिया, प्रतिक्रियाविरति, मैत्री, मिताहार, मितभाषण—प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा के ये पाँच सूत्र जीवन में आ जाते हैं तो स्वस्थ जीवनशैली के महत्त्वपूर्ण सूत्र हस्तगत हो जाते हैं।*

— आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विद्या कार्यशाला का शुभारंभ

सूरत।

मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, सिटीलाइट में जैन विद्या कार्यशाला का प्रारंभ हुआ।

प्रथम दिवस आयोजित उद्घाटन सत्र में मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि जैन विद्या अरिहंतों की अनुभूति वाणी है। जैन विद्या में अगणित रहस्य समाए हुए हैं। इन रहस्यों को जानने के लिए जैन दर्शन के अथाह सागर में डुबकी लगानी पड़ती है। जैन विद्या कार्यशाला यह अवसर प्रदान करती है।

शासन स्तंभ मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' के सान्निध्य में वर्ष १९९१ में जैन विद्या कार्यशाला का कोलकाता में शुभारंभ हुआ। था। तत्पश्चात प्रतिवर्ष हम जहाँ पर भी चातुर्मास करते हैं वहाँ यह कार्यशाला आयोजित होती है।

कच्छ-भुज निवासी एवं सूरत प्रवासी 'महादानी' सुश्राविका कानुबेन महादेवी भाई संघवी परिवार प्रायोजक के रूप में अपनी सेवा अर्पित कर रहा है। अध्यक्ष अमित सेठिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। उपासक राहुल खोखावत एवं विशाल परीख ने आवश्यक जानकारी दी।

महासभा है तेरापंथ समाज की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर्युषण पर्व धर्माराधना की दृष्टि से इतना महत्त्वपूर्ण है कि मानों पूरे वर्ष भर के लिए उससे आत्मा को खुराक प्राप्त हो जाती है। इस धर्माराधना का अच्छा आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास होना चाहिए। आचार्यश्री ने कालूयशोविलास के आख्यान क्रम को भी आगे बढ़ाया।

आज के कार्यक्रम में तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के शुभारम्भ के संदर्भ में आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के पदाधिकारियों तथा उपस्थित समस्त प्रतिनिधियों को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि 'संघे शक्ति कलियुगे' कलियुग में संघ में शक्ति बताई गई है। किसी समाज या संस्था के बहुत से लोग एक साथ होते हैं तो एक शक्ति की बात होती है। तेरापंथ समाज में अनेक संस्थाएं हैं, किन्तु जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ की रीढ़ की तरह महत्त्वपूर्ण है। महासभा और सभा/उपसभाओं में तो मानों मां-बेटी का संबंध है जो एक-दूसरे की सार-संभाल आत्मीयता के साथ कर सकती है। आचार्यश्री ने आगे कि जैसा मेरा आकलन पहले से महासभा के रूप में निखार आया है। कालूगणी की जन्मधरा पर इस सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। परम पूज्य कालूगणी के समय में ही इसकी स्थापना मान लें। सभी सभाएं व उपसभाएं अपने क्षेत्र की प्रतिनिधि संस्था होती है। साधु, साध्वियों, समणियों, उपासकों आदि की क्षेत्रों में अच्छी सार-संभाल का प्रयास हो। इस त्रिदिवसीय सम्मेलन से अच्छी प्रेरणा और अच्छी ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास हो। परस्पर खूब सौहार्द और एकता का भाव बना रहे। संगठन की मजबूती सेवा और कल्याण के काम आए। खूब धार्मिक-आध्यात्मिक विकास होता रहे। आचार्यश्री ने 'तेरापंथी सभा संचालन मार्गदर्शिका' पुस्तक के विषय में फरमाते हुए कहा कि यदि प्रतिनिधिगण इस पुस्तिका का पढ़ लें तो उनकी बहुत सारी समस्याओं का समाधान मिल सकता है।

कार्यक्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि विश्रुतकुमारजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। महासभा के अध्यक्ष श्री मनसुखलाल सेठिया ने महासभा के विभिन्न कार्यक्रमों आदि की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने किया।

इसके पूर्व प्रातःकाल आचार्यश्री से मंगलपाठ श्रवण के पश्चात प्रवचन पंडाल शुभारम्भ सत्र के आयोजन में सभा गीत का संगान हुआ। महासभा के अध्यक्ष श्री मनसुखलाल सेठिया ने सम्मेलन के शुभारम्भ की घोषणा की व श्रावक निष्ठापत्र का वाचन किया। इस कार्यक्रम में महासभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि विश्रुतकुमारजी ने संभागियों को उत्प्रेरित किया। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री माणकचन्द नाहटा, तेरापंथी सभा-छापर के अध्यक्ष श्री विजयसिंह सेठिया व महासभा के आंचलिक प्रभारी व सम्मेलन व्यवस्था संयोजक श्री नरेन्द्र नाहटा ने अपना स्वागत व्यक्त दिया। इस सत्र का संचालन महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

मनोज आभा बरमेचा, तारानगर निवासी, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उपासक संस्कारक राजकुमार जैन, संस्कारक मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से बरमेचा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। कार्यक्रम में तेममं तारानगर की अध्यक्ष सरोज बरमेचा व तेरापंथी सभा तारानगर के मंत्री मांगीलाल बरमेचा की उपस्थिति रही।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

राजेशकुमार मेवाराम वडेरा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक जितेंद्र छाजेड़, दिनेश बागरेचा एवं वीरेंद्र सालेचा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि को संपादित किया।

कार्यक्रम का संचालन संस्कारक सह-संयोजक दिनेश बागरेचा ने किया। परिषद की ओर से संस्कारकों द्वारा वडेरा परिवार को मंगलभावना पत्रक की भेंट दी गई। राजेश वडेरा ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में तेयुप पूर्व मंत्री संदीप मांडोत, कार्यसमिति सदस्य नरेश छाजेड़, मनीष मेहता की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

कोलकाता।

सुरेंद्र कुमार एवं विनीता दुगड़ का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारक महाबीर प्रताप दुगड़ एवं सह-संस्कारक की भूमिका परिषद के सहमंत्री राकेश नाहटा ने निभाई।

परिषद के मार्गदर्शक मंडल के सदस्य भूपेंद्र दुगड़ एवं भूतपूर्व अध्यक्ष मनोज नाहटा की उपस्थिति रही। परिषद ने अष्ट मंगल भेंट कर परिवार के प्रति मंगलकामना की।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

प्रांजल बैद के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चारण से संपन्न करवाया।

ओमप्रकाश व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप उपाध्यक्ष सचिन चंडालिया ने शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

ऑफिस का उद्घाटन

अहमदाबाद।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ भवन में धर्मसंघ की स्थानीय सभा-संस्थाओं की ऑफिस का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक अरुण बैद, सह-संस्कारक विक्रम दुगड़, प्रकाश धींग, जितेंद्र छाजेड़ ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि को संपादित करवाया।

महिला मंडल अध्यक्षा चांददेवी छाजेड़ एवं तेरापंथी सभा अध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया ने भी अपने भाव व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन संस्कारक अरुण बेद ने किया। परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भी भेंट किया गया।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सुरेश बागरेचा, टीपीएफ के अध्यक्ष दिनेश चोपड़ा, तेरापंथ सेवा समाज के मंत्री दिनेश बालड़, सभी संस्थाओ के पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

✦ *ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की उपासना करनी चाहिए और विवेकशील व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

रक्षाबंधन कार्यशाला के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

साध्वी डॉ० कुंदनरेखाजी के सान्निध्य में 'मैत्री का त्योहार रक्षाबंधन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखाजी ने कहा कि भारतीय संस्कृति पर्व प्रधान संस्कृति है। आपसी सौहार्द, मैत्री, करुणा, समन्वय, वात्सल्य जैसे मानवीय गुणों के प्रेरक होते हैं–त्योहार। रक्षाबंधन त्योहार का अपना विशेष महत्त्व है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि त्योहार तो प्रेरणा देने के लिए आते हैं, पर वर्तमान दुनिया के हालत ऐसे हैं, जहाँ वैमनस्य, द्वेष, कषाय प्राबल्य भाव अधिक नजर आते हैं। इस अवसर पर जैन इतिहास में राखी का त्योहार, रक्षाबंधन, सावन की पूर्णिमा क्यों प्रसिद्ध है, इस पर प्रकाश डाला गया। मुनि विष्णु जी ने धर्मसंघ की कैसे सुरक्षा की-जैन इतिहास में भी विस्तृत वर्णन उपलब्ध है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में पैंसठिया यंत्र का उच्चारण किया गया। तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष विजय जैन ने साहित्य भेंट कर अभिनंदन किया गया। पवन चोपड़ा ने अपनी प्रस्तुति दी।

जोधपुर

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेयुप के तत्त्वावधान में 'रक्षा बंधन कार्यशाला' का आयोजन तेरापंथ भवन (जाटावास) में किया गया। साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि रक्षा बंधन में अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिए। यह पर्व भाई-बहनों के प्रेम, सौहार्द, पवित्रता एवं उल्लास का प्रतीक है। भाई का विकास सदैव बहनों को संबल देता है, बहन की ममता, स्नेह, मंगलभावना भाई को नव-जीवन प्रदान करती है। जिसे उम्र के हर पड़ाव पर महसूस किया जाता है। हर भाई को अपनी स्त्री के सिवाय जगत की सभी स्त्रियों को बहन समझना चाहिए एवं संकटकालीन स्थिति में उसकी रक्षा करना भाई का कर्तव्य है। भाई-बहन का यह पवित्र प्रेम कायम रहे। रिश्तों के कच्चे धागे मजबूत बनें। प्रेम सौहार्द की सरिता प्रवाहित रहे। यह राखी प्यार की, विश्वास की, मुस्कान की, सम्मान की राखी है तथा क्षमा की राखी है।

साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी सुमंगला जी ने विचार प्रस्तुत किए। तेयुप मंत्री विनोद सुराणा ने स्वागत भाषण दिया। अभातेयुप के पूर्वाध्यक्ष मर्यादा कोठारी एवं ऋषभ श्यामसुखा ने जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार करवाया।

तेयुप के सदस्य कमल, श्रेणिक, अभिषेक सुराणा ने विजय गीत से मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन तरुण समदड़िया ने किया।

अमराईवाड़ी

तेमम द्वारा शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में रक्षाबंधन कार्यशाला एवं आध्यात्मिक राखी प्रतियोगिता का आयोजन सिंघवी भवन के प्रांगण में किया गया। मंत्रोच्चार के साथ साध्वीश्री जी ने कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने प्रश्नोत्तरी के द्वारा श्रावक समाज को जागरूक किया एवं आध्यात्मिक जानकारी प्रदान की।

साध्वी संवेगप्रभा जी ने गीत के माध्यम से भाव अभिव्यक्त किए।

अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने सभी तपस्वी भाई-बहनों तथा आए हुए सभी का स्वागत किया। महिला मंडल की बहनों ने रक्षाबंधन पर गीत द्वारा भाव व्यक्त किए। सभा के अध्यक्ष रमेश पगारिया एवं मंत्री गणपत हिरण ने अपने विचार रखे।

तत्पश्चात आध्यात्मिक राखी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें ११ बहनों ने भाग लिया। निर्णायक के रूप में संगीता सिंघवी एवं लक्ष्मी सिसोदिया रहे। आध्यात्मिक राखी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर पिस्तादेवी हिरण, द्वितीय स्थान पर सलोनी चपलोत, तृतीय स्थान पर सेजल मेहता, सांत्वना में शीलादेवी हिरण रही। विजेताओं को महिला मंडल के द्वारा पुरस्कृत किया गया। मंडल की मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

विक्रोली (मुंबई)

अभातेयुप के निर्देशन में जैन संस्कार विधि द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, विक्रोली में किया गया। जैन संस्कारक राकेश टुकलिया ने जैन संस्कार विधि से कार्यशाला को विधिपूर्वक संपन्न कराया। महिला मंडल के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष प्रकाश पोखरना ने किया।

उपस्थित धर्म परिवार ने जैन संस्कार विधि के बारे में अपनी जिज्ञासा का समाधान जैन संस्कारक से पाया। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष संजय गुंदेचा ने किया। कार्यक्रम में सभा कार्याध्यक्ष लक्ष्मीलाल चंडालिया, तेयुप टीम से सुरेंद्र पंकज, कमलेश, दीपक सूर्या, संजय, मनीष बोहरा, विपिन आदि कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। महिला मंडल से स्नेहलता पोखरना, सह-संयोजिका प्रियंका बोकड़िया व ज्ञानशाला परिवार तथा समाज के गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

पीलीबंगा

रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मनाने की कार्यशाला का आयोजन साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में हुआ। साध्वीश्री जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि जैन संस्कार विधि घर-घर में पहुँचे ऐसा आचार्य तुलसी का सपना था जिसे अभातेयुप अपनी परिषदों के माध्यम से पूरा करने का प्रयास कर रही है।

संस्कारक राजकुमार छाजेड़ ने जैन संस्कार विधि के बारे में जानकारी दी। इस कार्यशाला में बहनों ने अपने भाई को राखी भी बाँधी। कार्यशाला में ज्ञानशाला के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे। कार्यशाला का शुभारंभ सायर देवी बांठिया ने मंगलाचरण से किया। सतीश पुगलिया द्वारा संचालन किया गया।

सुनाम

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, सुनाम द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में मनाई गई। इस कार्यशाला में मुनिश्री ने जैन संस्कार विधि से हम कैसे त्योहार मना सकते हैं और इस तरह हम कैसे बाहरी आडंबरों से बच सकते हैं, इसके बारे में विचार प्रस्तुत किए।

इस कार्यशाला में अभातेयुप के निर्देशानुसार जैसे हमें आदेश दिया गया था उसी तरह तेमम की मंत्री सुनीता जैन ने जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार कर और पूरी सामग्री सहित कार्यशाला लगाई। और इस कार्यक्रम को उसी ढंग से मनाया गया। लोगों को इस त्योहार को कैसे मनाएँ, यह सब कार्य करके दिखाए और इस तरह हर त्योहार को जैन संस्कार विधि से मनाने की प्रेरणा दी। इस कार्यशाला में तेयुप को तेमम का पूरा सहयोग मिला।

चलथान

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, चलथान द्वारा साध्वी सम्यक्प्रभाजी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला का आरंभ हुआ।

तेयुप उपाध्यक्ष दीपक खाब्या ने स्वागत वक्तव्य दिया। संस्कारक राकेश दक, ज्ञान दुगड़, मनोज कावड़िया, विपिन पितलिया द्वारा मंत्रोच्चार कर जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने की विधिवत जानकारी देते हुए मंगलभावना यंत्र की स्थापना करवाई।

कार्यशाला में ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षिकाओं, तेयुप, महिला मंडल से करीब ७० सदस्यों की उपस्थिति रही। साध्वीश्री जी ने संस्कारकों के प्रति मंगलकामना प्रेषित की।

फरीदाबाद

रक्षाबंधन कार्यशाला जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० शुभप्रभाजी के सान्निध्य में मनाया गया। संस्कारक की भूमिका भरत बेगवानी व राजेश जैन ने निभाई। कार्यक्रम में महासभा एवं आंचलिक सभा के सदस्य व पदाधिकारीगण की उपस्थिति रही।

साध्वीश्री ने जैन संस्कार विधि के बारे में समझाया और उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के पश्चात् मंगलभावना यंत्र वितरित किए गए। मंत्री जितेंद्र लुनिया द्वारा मंच संचालन किया गया।

माधावरम्, चेन्नई

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप की आयोजना में तेरापंथ नगर, माधावरम् में रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल समुच्चारण के साथ कार्यशाला प्रारंभ हुई। तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी और प्रबंधन मंडल, माधावरम, तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड के प्रबंध न्यासी धीसूलाल बोहरा, जैन तेरापंथ नगर के अध्यक्ष माणकचंद रांका एवं संस्कारकों ने मंगलभावना पत्रक की स्थापना की। मंत्री संदीप मूथा ने सभी के तिलक किया।

अभातेयुप संस्कारक स्वरूपचंद दांती, संस्कारक हनुमान सुखलेचा ने संपूर्ण मंत्रोच्चार के साथ रक्षाबंधन पर्व को जैन संस्कार विधि द्वारा कैसे मनाया जाए डेमों करके बताया।

सहमंत्री कोमल डागा, संगठन मंत्री सुधीर संचेती, एटीडीसी संयोजक प्रदीप सुराणा उपस्थित रहे। इस अवसर पर अनेकों गणमान्य व्यक्ति, संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्य उपस्थित थे।

कांदिवली

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में रक्षाबंधन कार्यशाला नए अंदाज में परिसंपन्न हुई। साध्वीश्रीजी ने कहा कि राखी भारतीय संस्कृति का एक पवित्र त्योहार है, इसका अपना विशेष महत्त्व है। भगवान महावीर ने कहा कि तुम अपनी आत्मा की सतत रक्षा करते हुए गतिमान रहो।

रक्षाबंधन कार्यशाला में उपस्थित संभागियों को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने कहा कि सुसमाहित इंद्रियों के द्वारा हम अपनी रक्षा करें। इंद्रियों और मन की लगाम जब आत्मा के पास होगी, आत्मरक्षा हो जाएगी। साध्वीवृंद ने समवेत स्वर में रक्षाबंधन के गीत का संगान किया।

जैन संस्कार विधि से विधिवत जानकारी देते हुए सौरभ दुधेड़िया, पारसमल दुगड़, तोलाराम छाजेड़ ने मंत्रोच्चार आदि विधि की। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, मुंबई की वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुमुद कच्छारा, चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेंद्र कोठारी, अभातेयुप के सहमंत्री भूपेश कोठारी आदि ने अपने उद्गार व्यक्त किए। तेमम, कांदिवली की ओर से कन्याओं ने राखी बांधकर रक्षाबंधन मनाया।

साध्वीश्री जी की ओर से १३ राखियों का उपहार समवेत रूप से सबको दिया गया। कांदिवली संयोजिका नीतू नाहटा ने कृतज्ञता ज्ञापित की। इस अवसर पर लगभग ३०० से अधिक भाई-बहिनों ने १००० राखियाँ त्याग और नियम की स्वीकार की।

हिरियुर

अभातेयुप द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला को तेयुप द्वारा तेरापंथ सभा भवन में समायोजित की गई। जैन संस्कार विधि की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण से हुई। संस्कारक तेजराज चोपड़ा एवं सहयोगी भाई नरेश तातेड़ ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कैसे मनाएँ सिखलाया।

इस अवसर पर यूकेटीएस के अध्यक्ष जयंतीलाल चोपड़ा, तेयुप अध्यक्ष महावीर चोपड़ा, तेरापंथ सभा मंत्री गौतमचंद चोपड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण तथा गणमान्यजन उपस्थित थे। तेयुप मंत्री विकास बोकड़िया ने कार्यक्रम का संचालन किया।

आध्यात्मिक राखी मुक्ति की झांकी कार्यक्रम

ठाणे।

तेरापंथ भवन में साध्वीश्री जी की तरफ से रंग-बिरंगी, हीरा, पन्ना, सोना, रूपा, कुंदन, माणक, मोती से सजी राखियाँ रखी गईं। साध्वियाँ जो समाज की बहनें और बेटियाँ हैं और समाज के सभी भाई-बहनें उनके रिश्तेदार इस नाते साध्वियों ने सभी को आध्यात्मिक रक्षा कवच प्रदान किया। सभी ने अपनी राखी पसंद कर पीछे लिखा आध्यात्मिक त्याग-संकल्प साध्वीश्री जी को भेंट किया जिसे अगले एक वर्ष तक निभाया जाएगा।

इस अनोखो रक्षाबंधन में सभी भाई-बहनों ने बड़े उत्साह, प्रेम और समर्पण भाव से भाग लिया। राखी और रक्षा का वचन पर प्रकाश डालती बहुत अर्थपूर्ण स्वरचित गीतिका का संगान किया। शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी ने भाई-बहन के इस त्योहार की महिमा और महत्त्व सहित बताया। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

देश और काल : एक बहाना

गुरु के वचनों से शिष्य का मन आश्वस्त नहीं हुआ। वे फिर बोले, 'गुरुदेव! आपका कथन ठीक है, पर वह मेरी समझ में नहीं आ रहा है। सतयुग में साधना का जो स्वरूप था वह आज बदल कैसे सकता है? उस समय जो उपवास होता था, वही तो आज होता है। क्या आज कोई व्यक्ति चार रोटी खाकर उपवास करता है? इस युग में भी हमें साधना की उसी पद्धति को उजागर करके चलना है, जो हमें अपने आगम-पुरुषों से उपलब्ध है। आप उस मार्ग पर चलना चाहें तो मैं आपके साथ हूँ। अन्यथा आप मुझे अनुज्ञा दीजिए, मैं अपनी मंजिल तक पहुँचकर रहूँगा।

यह घोषणा उस व्यक्ति की है, जिसने देश और काल को अतिरिक्त मूल्य नहीं दिया। जो देश और काल के प्रवाह में नहीं बहा। वह साधना के पथ पर आगे बढ़ा ही नहीं, उसने वहाँ अपने चरण-चिह्न अंकित कर दिए जो शताब्दियों के बाद भी गुमराह व्यक्तियों को पथ-दर्शन देने वाले हैं।

हमारी कठिनाई एक है कि हमने साधना के लिए मनुष्य को पकड़ा। यदि हम पशुओं पर प्रयोग करते तो संभवतः अधिक सफल होते। क्योंकि उनका अपना कोई चिंतन और धारणाएँ नहीं होती। उन्हें जो कुछ समझाया जाता, वे उसी का अनुसरण करते। पर पता नहीं इस मनुष्य की खोपड़ी में क्या भरा है, जो वह इतना ग्रहणशील नहीं हो पा रहा है।

एक भिखारी हाथ में भिक्षा-पात्र लिए शहर में घूम रहा था, पर किसी के सामने हाथ नहीं पसार रहा था। उसकी यह प्रतिज्ञा थी कि वह उसी व्यक्ति से भिक्षा लेगा, जो उसके भिक्षा-पात्र को स्वर्ण-मुद्राओं से भर देगा। शहर में बहुत धनी-मानी व्यक्ति रहते थे, किंतु किसी ने उसकी प्रतिज्ञा पूरी नहीं की।

बात राजा तक पहुँची। राजा ने सुना कि उसके राज्य में एक ऐसा भिखारी घूम रहा है, जिसको भीख देने वाला कोई नहीं है। राजा की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। उसके अहं पर चोट हुई। उसने भिखारी को अपने सामने उपस्थित करने का आदेश दिया।

भिखारी राजा के सामने खड़ा था। राजा ने पूछा–'क्या चाहता है?' वह बोला–'राजन्! यह मेरा पात्र स्वर्ण-मुद्राओं से भर जाए, यही एक छोटी-सी चाह है।' राजा ने कोषाध्यक्ष को बुलाकर कहा–'जाओ, इस भिखारी का पात्र स्पर्ण-मुद्राओं से भर दो।' कोषाध्यक्ष ने आदेश का पालन किया। पर आश्चर्य! पूरा राज्यकोष खाली होने पर भी भिक्षा-पात्र नहीं भरा।

राजा के पास सूचना पहुँची। उसने भिखारी से पूछा–'यह क्या बला है? वह बोला–'राजन्! मुझे एक पात्र की जरूरत थी। मैं उसकी खोज में घूमता-घूमता श्मशान में पहुँच गया। वहाँ मुझे यह खोपड़ी मिली। उसी को मैंने भिक्षा-पात्र बना लिया।' राजा ने फिर पूछा–'किसकी खोपड़ी है यह?' भिखारी बोला–'राजन्! यह मनुष्य की खोपड़ी है। इसमें कितना ही डाल दो, यह भरती ही नहीं है।'

कैसा तीखा व्यंग्य है यह मनुष्य पर। हम उस मनुष्य पर साधना के प्रयोग कर रहे हैं, जिसकी खोपड़ी कभी भरती ही नहीं है। उसे जो कुछ तत्त्व दिया जाएगा, वह विस्मृत होता जाएगा, ऐसी स्थिति में साधना का प्रयोग स्वयं ही प्रश्न-चिह्न नहीं बन जाएगा क्या?

मैं तो बहुत बार यह सोचता हूँ कि साधना करनी न पड़े, सहज हो जाए वह स्थिति सुंदर है। साधना-काल में साधक ध्यान के साथ जप का प्रयोग भी करता है। जप के लिए एक मंत्र है 'सोऽहम्'। 'सोऽहम्' शब्द का उच्चारण बहुत स्थूल बात है। हम जो श्वास लें वह 'सोऽहम्' में परिणत हो जाए, तब साधना का क्रम आगे बढ़ता है। सोऽहं, सोऽहं, सोऽहं के जप में इतनी तल्लीनता आ जाए कि सोऽहं-हंसोऽहं में परिणत हो जाए। यह हंस क्या है? परम हंस, परमात्मा ही तो है। चेतना जब निर्मल बन जाती है, हंस बन जाती है, विवेकी बन जाती है, तब ही साधना की निष्पत्ति आ पाती है।

अकर्म से निकला हुआ कर्म

साधना के क्षेत्र में कर्म और अकर्म की समस्या भी कम उलझी हुई नहीं है। कुछ साधक अकर्म को ही सर्वाधिक मूल्य देते हैं। वे कर्म को छोड़ना चाहते हैं। किंतु गीता इस तथ्य को नकारती हुई कहती–

न हि देहभृतां कश्चित्। जातु तिष्ठत्यकर्मकृत।।

जितने देहधारी प्राणी हैं, उनमें कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो कर्म किए बिना रह सके। जैन दर्शन के अनुसार आत्म-विकास की चौदह भूमिकाओं में तेरहवीं भूमिका तक व्यक्ति कर्म करता रहता है। चौदहवीं भूमिका में रहने का कालमान एक मिनट का भी नहीं है, ऐसी स्थिति में संसारी प्राणी के लिए अकर्म रहने की बात समझ में नहीं आ सकती। कोई व्यक्ति एक घंटा कर्म करता है और आधा घंटा आँख मूँदकर बैठ जाता है। क्या यह अकर्म की साधना नहीं है? स्थूल दृष्टि से यह अकर्म जैसा प्रतीत होता है, पर सूक्ष्म दृष्टि से बैठना भी एक प्रकार का कर्म है।

संसारी प्राणी अकर्म में नहीं रह सकता, यह एक सार्वभौम और सार्वकालिक सत्य है तो फिर यह कर्म और अकर्म का द्वंद्व खड़ा ही क्यों किया जाता है? इस प्रश्न का समाधान भी गीता में प्राप्त है। वहाँ बताया गया–

कर्मण्यकर्म यः पश्येत्। अकर्मणि च कर्म यः।।

जो व्यक्ति कर्म में अकर्म को देखता है और अकर्म में कर्म को देखता है, वही प्रज्ञावान है। गीता का यह सत्य भाव-क्रिया के संदर्भ में शत-प्रतिशत सही उतरता है। भाव-क्रिया का अर्थ है वर्तमान में क्रियमाण क्रिया के अतिरिक्त अन्य सब क्रियाओं का विसर्जन। एक कर्म के अतिरिक्त बाकी सब कर्मों की विस्मृति कर्म में अकर्म की साधना है। इसी प्रकार ऊपर से सब क्रियाओं को छोड़कर मन को यायावर बनाए रखना अकर्म में कर्म का प्रयोग है।

जैन दर्शन में दो शब्द आते हैं–समिति और गुप्तिं समिति अमुक प्रकार की प्रवृत्ति है फिर भी इसमें गुप्ति (प्रवृत्ति-निषेध) की अनिवार्यता है। यह कर्म अकर्म की साधना का प्रतीक है। समिति पाँच प्रकार की है–ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेप और उत्सर्ग। जिस समय ईर्या समिति होती है, अन्यान्य सब क्रियाओं की गुप्ति हो जाती है। एक दिशा में प्रवृत्ति शुरू होते ही शेष सब दिशाओं की प्रवृत्तियाँ रुक जाती हैं। यह गुप्ति-संवलित समिति अर्थात् अकर्म प्रधान कर्म है।

गुप्ति के तीन प्रकार हैं–मन, वचन और काय। वचन-गुप्ति की साधना करने वाला व्यक्ति दिन-भर बोलने पर भी मौनी कहा जा सकता है। यह कर्म में से निकला हुआ अकर्म है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(८२)

नहीं भुजाओं से तर सकती संदेहों का पारावार।
नाव सत्य की पास तुम्हारे पहुँचा दो नाविक! उस पार।।

'समयं गोयम! मा पमायए' महावीर का मंत्र महान
सिखलाते रहते निष्ठा से उपकृत है यह सकल जहान
समय नियोजन कला विलक्षण प्रतिबिंबित है कण-कण में
नहीं कहीं ठहराव रवानी हर गतिविधि में हर क्षण में
मिलती रही प्रेरणा पल-पल खुले प्रगति के अभिनव द्वार।।

'जाए सद्धाए निक्खंतो' महावीर का यह संकेत
तुमने ही समझाया उनको बने हुए हैं जो अनिकेत
प्रतिस्रोत में बढ़ते जाएँ जीवनधारा रहे पुनीत
रहे गूँजता साँस-साँस में आत्मा का मधुरिम संगीत
सत्य-शोध की जगे चेतना यही साधना का आधार।।

'अरइं आउट्टे से मेहावी' महावीर का यह उद्घोष
जब-जब भी सुनते हैं तुमसे मिल जाता पूरा परितोष
महाप्राण! तुम भरते जाओ मेरे प्राणों में उच्छ्वास
दो आशीर्वर ऐसा अनुपम सार्थक कर पाऊँ विश्वास
सोच सकारात्मक हो मेरी सृजन चेतना का विस्तार।।

(८३)

छवि अलौकिक आर्यवर! सचमुच तुम्हारी
मुग्ध दुनिया देख नयनों का नजारा
पुजारी पुरुषार्थ के अप्रतिम हो तुम
भाग्य कितनों का प्रभो! तुमने संवारा।।

हो महादानी प्रभो! इस विश्व में तुम
दे सकूँ तुमको कहाँ औकात मेरी
सत्य का आलोक सबको बाँटते तुम
दिग्दिगंतों में बजी है सुयश भेरी
है नहीं अब चाह कोई भी अधूरी
रहे मिलता सुखद सन्निधि में उजारा।।

प्यास कोई जिंदगी में क्यों सताए
सुभाषित-पीयूष जी-भर पी रही हूँ
भरोसा तुमने दिया है जो अयाचित
उसी के आधार पर अब जी रही हूँ
निरंतर गतिशील निज पथ पर रहूँगी
रहो देते हर कठिन पल में सहारा।।

शांत और सुरम्य जिन परमाणुओं से
हुई निर्मित सहज ही अद्भुत तुम्हारी
विश्व में परमाणु वैसे हैं नहीं अब
खोज ली अन्वेषकों ने धरा सारी
हो गए अभिभूत वे सुर मनुज सारे
निकटता से जब कभी तुमको निहारा।।

(क्रमशः)

✦ *जिसमें कर्तृत्व होता है ओर जो समाजोत्थान के लिए कार्य करता है, वह समाज के लिए सम्मान्य बन जाता है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

श्री आर. एन.रवि
महामहिम राज्यपाल,तमिलनाडु)

डॉ. हरि बाबू कंभमपति
राज्यपाल -मिजोरम

श्री मंगू भाई पटेल
राज्य पाल महोदय -मध्य प्रदेश

श्री संजय कुमार ठाकुर
जिला राज्यपाल-रोटरी जिला 3250, बिहार और झारखंड

श्री राहुल नारवेकर
विधानसभा स्पीकर -महाराष्ट्र

श्री एकनाथजी शिंदे
महाराष्ट्र मुख्यमंत्री

श्री ऋषिकेश पटेल
स्वास्थ्य मंत्री -गुजरात

प्रभुराम चौधरी
स्वास्थ्य मंत्री -मध्य प्रदेश

श्री सोमदत्त
विधायक सदर बाजार, दिल्ली

श्री अशोक पराशर
विधायक -लुधियाना सेंट्रल

श्री जितेंद्र महाजन
विधायक,रोहतास नगर दिल्ली

श्री अभय वर्मा
विधायक लक्ष्मी नगर -दिल्ली

श्री मदन लाल बग्गा
विधायक -लुधियाना उत्तर

श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
विधायक मॉडल टॉउन

श्रीमती अग्निमित्र पॉल
भाजपा विधायक

श्री अंकुर राठी
अभिनेता

श्री रितेश मिश्रा
आईआरएस -आईटी आयुक्त

डॉ श्रेयांश के जैन
राज्य अध्यक्ष भारतीय योग सहयोगी

अभिनेता व अभिनेत्रीयां
टॉलीवुड जगत

डॉ मुकेश मोड
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मालवा प्रांत

Globally Supported by:
Jaishree Cotton Mills
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

Empowered By:
OLD UNION
THANGA HOUSE
ANTISPOT

Powered By:
Lalwani Ferro Alloys Ltd

Promoted By:
BIKAJI

तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

श्री उचित सिंघल
रेलवे पुलिस बल j&k

श्री सुनील बाबूराव मेंधे
एम. पी. भंडारा - गोंदिया महाराष्ट्र

श्री आशीष मर्चेंट
अध्यक्ष, HHPAKICI

श्री अमित ठाकुर
बीजेपी युवा मोर्चा -अध्यक्ष हिमाचल प्रदेश

श्री अभिमन्यु दस्सानी
अभिनेता

डॉ. अजय मुर्डिया चेयरमैन
इंदिरा आईवीएफ

श्री अमित वाधवा
चेयरमैन -बफरिंग मीडिया टेक

श्री एन.के.गुप्ता
निदेशक -राज्य रक्ताधान परिषद, बिहार

श्री विष्णुदत्त शर्मा व हितानन्द शर्मा
संगठन मंत्री व महामंत्री भाजपा

श्री देवेन्द्र जोशी
भाजपा जिला अध्यक्ष

श्रीमति मीरा बघेल
मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, रायपुर

सुशीलजी शिंदे
NSS विशेष कार्य अधिकारी -मुंबई विश्वविद्यालय

सुश्री मीनू खरे
असिस्टेंट डायरेक्टर आकाशवाणी - लखनऊ

सुदीप बंद्योपाध्याय
लोकसभा सदस्य

श्रीमती सुरभि मलिक
डीसी -लुधियाना

श्री राजेन्द्र गहलोत
राज्यसभा सांसद

श्री तीरथ सिंह रावत
पूर्व मुख्यमंत्री -उत्तराखंड

श्री स्वपन कांति घोष
इंडस्ट्रिलिस्ट -सियूरी-बीरभूम

श्रीमति बलदीप कौर
डी.सी -मानसा

श्री हरीश कल्याण
अभिनेता तमिल एवं तेलुगु

17 सितम्बर 2022 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 1000 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों के माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुती प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.mbdd.in पर लॉगिन करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 अगस्त, 2022

✦ *इंद्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

संबोधि

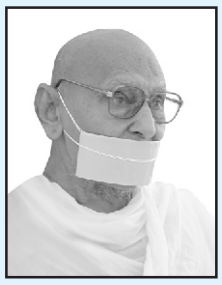

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१२) सम्यग्दृष्टेरवबोधो, भवेज्ज्ञानं तदीक्षया।
धुतमोहो निजं पश्यन्, सम्यग्दृष्टिरसौ भवेत्।।

सम्यग्-दृष्टि व्यक्ति का ज्ञान सत्-पात्र की अपेक्षा से सम्यग्-ज्ञान कहलाता है। जिसका दर्शनमोह विलीन हो गया है और जो आत्मा को देखता है, वह सम्यग् दृष्टि होता है।

अनंतानुबंधी मोह का अनुदय होने पर सम्यक् दर्शन की प्राप्ति होती है। सम्यक् दृष्टि में 'स्व' और 'पर' का विवेक जागृत हो जाता है। वह 'स्व' को जान लेता है, 'पर' में उसकी अभिरुचि नहीं होती। गृहस्थ जीवन में रहता हुआ भी वह निर्लिप्त-सा जीवन जीता है।

सम्यक्दृष्टि जीवड़ा, करै कुटुम्ब प्रतिपाल।
अंतर में न्यारा रहै, (जिम) धाय खिलावै बाल।।

सम्यक्दृष्टि अंतरात्मा है। वह बाहरी क्रिया की प्रतिक्रिया अपने ऊपर नहीं होने देता। वह कार्य करता हुआ भी मन से पृथक् रहता है। समाधिशतक में पूज्यपाद लिखते हैं–बुद्धि में आत्मा के अतिरिक्त किसी भी कार्य को चिरकाल तक टिकाए न रखें। आवश्यकतावश यदि कोई कार्य करना हो तो शरीर और वाणी से करें, किंतु मन का संयोजन न करें। अपने कार्य के लिए कुछ कहना हो तो वह कहकर उसको भूल जाएँ। सुखी और सरल जीवन जीने की इससे बढ़कर और कोई कला नहीं है। मनुष्य इस संभव को असंभव मान परिस्थितियों के हाथों में अपना अस्तित्व सौंप देता है। मनुष्य स्वयं अपना निर्माता है। सम्यग् दर्शन और कुछ नहीं, स्व का निर्माण है, दर्शन है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

दान धर्म

प्रश्न २४ : विसर्जन, वितरण में कहाँ तक संगति है?

उत्तर : विसर्जन का अर्थ है अपनी वस्तु के स्वामित्व को छोड़ना। उस परित्यक्त या विसर्जित वस्तु की व्यवस्था करना वितरण है। विसर्जन करने वाला व्यक्ति यह सोचता है कि मैं समाज में जीता हूँ तो समाज का मेरे पर उपकार है। मैं भी समाज की उन्नति के लिए कुछ करूँ। इस दृष्टि से वह विसर्जित वस्तु को समाज की प्रगति के लिए नियोजन करता है, व्यवस्था करता है, उसका वितरण में समावेश हो जाता है। विसर्जन धर्म की कोटि में आता है, जबकि वितरण को धर्म नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न २५ : चंदा आदि देना क्या है?

उत्तर : धन स्वयं परिग्रह है। उसका ग्रहण, दान व संरक्षण परिग्रह को पोषण देता है, इसलिए चंदा व इस सदृश प्रवृत्तियों में धर्म नहीं हो सकता।

प्रश्न २६ : समाज के व्यवहार को निभाना क्या धर्म नहीं है?

उत्तर : समाज के व्यवहार को निभाना आत्म धर्म नहीं, समाज धर्म है। जिस प्रवृत्ति में ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की अभिवृद्धि होती है, वह आत्म धर्म है। जिस प्रवृत्ति में समाज का व्यवहार निभता है, वह समाज धर्म है।

प्रश्न २७ : कुआँ व तालाब खुदवाना, कमजोर वर्ग की सहायता आदि करना बहुत उपयोगी कार्य है, फिर उनमें आत्म धर्म क्यों नहीं?

उत्तर : उपयोगिता अलग है, अध्यात्म अलग है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सेना की भी अपनी उपयोगिता है, किंतु अध्यात्म प्राणीमात्र के साथ मैत्री संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देता है। उसके लिए सेना की कोई उपादेयता नहीं है। दोनों की दिशा भिन्न है, वे एक कैसे हो सकती है।

शील धर्म

प्रश्न १ : शील किसे कहते हैं?

उत्तर : शील का अर्थ है ब्रह्मचर्य (मैथुन विरमण), चर्या (आचार का पालन)। जिसमें मोक्ष के लिए ब्रह्म–सर्व प्रकार के संयम की चर्या–अनुष्ठान हो, वह ब्रह्मचर्य है। वस्ति (इंद्रिय) संयम अर्थात् वस्ति निरोध संयम है। इस अर्थ में सर्व दिव्य और औदारिक काम और रति-सुखों में मन, वचन, काया और कृत, कारित व अनुमोदन रूप से विरति ब्रह्मचर्य है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य अभयदेव (नवांगी टीकाकार)

खरतरगच्छीय कई पट्टावलियों के उल्लेखानुसार अभयदेवसूरि का स्वर्गवास वी०नि० १६०५ (वि०सं० ११३५) में तथा मतानुसार उनका स्वर्गवास कपड़गंज में वी०नि० १६०६ (वि०सं० ११३६) में हुआ था।

यशस्वी टीकाकार आचार्य अभयदेवसूरि की कुल आयु सड़सठ वर्ष की थी।

आचार्य अभयदेव ने टीका-रचना का कार्य वी०नि० १५६०-१५६८ (वि०सं० ११२०-११२८) में किया था। पट्टावलियों के अनुसार टीका-कार्य-संपन्नता के छह वर्ष अथवा ग्यारह वर्ष बाद ही उनका स्वर्गवास हो जाता है। इस आधार पर अभयदेव वी०नि० १५वीं-१६वीं (वि०सं० ११वीं-१२वीं) सदी के विद्वान् सिद्ध होते हैं।

आचार्य अभयदेवसूरि का टीका साहित्य के रूप में जैन समाज को महान् अनुदान है।

आचार्य हेमचंद्र

श्रीहेमचंद्रसूरिणामपूर्वं वचनामृतम्।
जीवातुर्विश्वजीवानां राजचित्तावनिस्थितम्।।

'आचार्य हेमचंद्र के वचन समस्त प्राणियों के लिए अमृततुल्य हैं' प्रभाचंद्राचार्य के इन शब्दों में अतिरंजन नहीं है। विद्वान् हेमचंद्र युगसंस्थापक आचार्य थे। वे असाधारण प्रज्ञा से संपन्न थे। सार्धत्रय कोटि पद्यों की रचना कर उन्होंने सरस्वती के भंडार को अक्षय-निधि से भरा था। गुजरात नरेश सिद्धराज जयसिंह को अध्यात्म-संदेश से प्रभावित कर एवं उनके उत्तराधिकारी नरेश कुमारपाल को व्रत-दीक्षा प्रदान कर जैनशासन के गौरव को सहस्र-गुणित विस्तार प्रदान किया था। उनके ज्ञान-सूर्य की किरणों के प्रसार से गुजरात-संस्कृति के प्राण पुलक उठे थे। धरा का कण-कण अध्यात्म-आलोक से जगमगा उठा था। सामाजिक, राजनीतिक जीवन में भी नव चेतना का जागरण हुआ। साहित्य-संस्थान को नया रूप मिला था। कला सजीव हो गई थी। गुजरात राज्य में यह काल जैनधर्म के परम उत्कर्ष का काल था।

प्रभावक चरित्र ग्रंथ के अनुसार आचार्य हेमचंद्र के गुरु चंद्रगच्छ के देवचंद्रसूरि थे। आचार्य हेमचंद्र वणिक्-पुत्र थे। उनका जन्म गुजरात प्रदेशांतर्गत धन्धूका नगर में वी०नि० १६१५ (वि०सं० ११४५, ई० १०८८) में कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि के समय मोढ़ वंश में हुआ था। उनके पिता का नाम चच्च अथवा चाचिग एवं माता का नाम पाहिनी था। उनका नाम चांगदेव था।

आचार्य हेमचंद्र के समय में गुजरात प्रदेशांतर्गत अणहिल्लपुर (पाटण) नगर में सिद्धराज जयसिंह का राज्य था। नरेश के कुशल नेतृत्व में राज्य भौतिक संपदा की दृष्टि से उत्कर्ष पर था। प्रजा सुखी थी। अणहिल्लपुर के अंतर्गत धन्धूका भी एक समृद्ध नगर था। नगर में अनेक वणिक् परिवार रहते थे। उनमें मोढ़ परिवार विख्यात था। हेमचंद्रसूरि के पिता चाचिग श्रेष्ठी मोढ़ वंश के अग्रणी थे। वे धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। विद्वज्जनों का सम्मान करते थे। उनके पूर्वज मोढ़ेरा ग्रामवासी होने के कारण ही वे मोढ़ वंशी कहलाते थे। हेमचंद्र की माता पाहिनी भी साक्षात् लक्ष्मी रूपा एवं शील गुण संपन्ना थीं। जैन धर्म में उनकी आस्था दृढ़ थी। हेमचंद्र जब गर्भ में आए, उस समय पाहिनी ने स्वप्न में अपने को चिंतामणि रत्न गुरु के चरणों में भक्ति-भाव से समर्पित करते देखा। प्रबंध कोश के अनुसार उसने स्वप्न में आम्रफल देखा था। उस समय धंधूकापुर में चांद्रगच्छ से संबंधित प्रद्युम्नसूरि के शिष्य देवचंद्रसूरि विराजमान थे। पाहिनी ने स्वप्न की बात उनके सामने रखी। स्वप्न का फलादेश बताते हुए गुरु ने कहा–पाहिनी! तुम्हारी कुक्षि से पुत्र-रत्न का जन्म होगा। वह जैनशासन सागर में कौस्तुभमणि तुल्य प्रभावी होगा।

गुरु के वचनों को सुनकर पाहिनी प्रसन्न हुई। विशेष धर्माराधना के साथ वह समय बिताने लगी। कालावधि समाप्त होने पर उसमें ई० सन् १०८८ में कार्तिक पूर्णिमा की मध्य रात्रि में तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। जन्म के बारहवें दिन उल्लासपूर्ण वातावरण में पुत्र का नाम चांगदेव रखा गया। अभिभावकों के समुचित संरक्षण में बालक दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा।

(क्रमशः)

मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

कांदिवली

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में जयंत रांका (उम्र १७ वर्ष) एवं मंजु सुरेश बोहरा के मासखमण तप का अभिनंदन समारोह सानंद संपन्न हुआ।

तप अनुमोदना के क्रम में एसटीएमएफ के अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेरापंथी सभा, कांदिवली-मालाड के अध्यक्ष पारस दुगड़, इंदरमल कच्छारा, तेमम-मुंबई से रचना हिरण, महिला मंडल से नीतू नाहटा एवं महिला वर्ग ने क्रमशः वक्तव्य व गीत की सुंदर अभिव्यक्ति दी। रांका परिवार की ओर से शिमला बडोला ने साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन किया तो बहनों ने गीत से अभिनंदन किया। एकता आंचलिया, लक्षिका रांका आदि ने भाव प्रकट किए। नवनीत कच्छारा ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि तप क्यों करें? एक विमर्शनीय प्रश्न है। भगवान महावीर ने कहा है कि इहलोक या परलोक के ऐश्वर्य के लिए तप नहीं करें, ना ही प्रशंसा, कीर्ति या नाम के लिए तप करना चाहिए, तप केवल आत्मशुद्धि के लिए किया जाए।

साध्वीवृंद ने मधुर गीतों से सबका मन मोहा। समकित पारीख ने कम्प्यूटर सेंटर के शुभारंभ की जानकारी प्रदान की। तपस्वी जयंत रांका के ननिहाल पक्ष से मामी व मासी आदि तपोभिनंदन किया। धन्यवाद ज्ञापन फाउंडेशन के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी ने किया।

इस अवसर पर मंजुला तलेसरा ने भी साध्वीश्री जी के मासखमण का प्रत्याख्यान किया। राजभवन में एक साथ तीन मासखमण के प्रत्याख्यान हुए। भायंदर से निर्मल जैन व प्रज्ञा मंडल ने सम्मान किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन व अन्य संस्थाओं की ओर से तपस्वी भाई-बहन अभिनंदन पत्र साहित्य आदि से सम्मान किया गया। तपोपहार के रूप में अनेक भाई-बहनों ने आठम तप, छह उपवास, अठाई, आयंबिल, का उपहार दिया। मंच संचालन डॉ० साध्वी योगक्षेमप्रभाजी ने किया।

माधावरम, चेन्नई

तप कर्म निर्जरा का अमोघ साधन है। तप से जहाँ आत्मा उज्ज्वलता को प्राप्त होती है, वहीं तन-मन की शुद्धि में सहायक बनती है। सहयोगी बनती है। निम्न विचार कुसुमलता खिवसरा के मासखमण तप की अनुमोदना जय समवसरण, जैन तेरापंथ नगर, माधावरम, चेन्नई में मुनि सुधाकर जी ने कहे।

मुनिश्री ने कहा कि मजबूत मनोबल, दृढ़-संकल्पशक्ति, विशिष्ट इच्छाशक्ति से ही तप के मार्ग पर आरूढ़ हो सकते हैं। भगवान महावीर ने मोक्ष प्राप्ति के चार मार्गों में एक मार्ग तप को बताया है। बहन कुसुमलता ने अपने आत्मबल को उजागर कर मासखमण तप के पूर्णता की ओर है। उनके स्वयं की शक्ति के साथ परिवार का सहयोग भी साधुवाद के समान है। वे तपोःमार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते रहें, मंगलकामना।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि सरलता, विनम्रता, नम्रतापूर्वक व्यवहार जीवन के उच्च शिखरों की ओर ले जाता है। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट द्वारा समायोजित तपोभिनंदन में प्रबंध न्यासी धीसूलाल बोहरा, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हीरण, तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, अणुव्रत समिति सहमंत्री स्वरूपचंद दांती, जेटीएन के नवमनोनीत अध्यक्ष माणकचंद रांका ने अपने वक्तव्य, गीत के द्वारा तपस्वी के तप की अभिवंदना की। माधवरम् की बहनों ने लघु नाटिका के साथ तप की महिमा बताई। संचालन सुरेश रांका ने किया। ट्रस्ट बोर्ड द्वारा तपस्वी बहन का तपोभिनंदन पत्र, साहित्य प्रदान कर सम्मान किया गया।

उधना

साध्वी लब्धिश्री जी के सान्निध्य में उधना तेरापंथ भवन में अर्जुन धूपिया की विरल सिद्धि जैन संस्कार विधि से पारणा करवाया। वर्षी तप की साधना के साथ-साथ उन्होंने मासखमण की तपस्या भी पूर्ण की। अर्जुन धुपिया पिछले लगभग २० वर्षों से प्रति वर्ष चातुर्मास में अठाई या अठाई से अधिक की तपस्या करते रहे हैं। २० वर्ष से उन्हें रात्रि भोजन त्याग है। यह उनका चौथा मासखमण है।

साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि अर्जुन धूपिया तेरापंथ धर्मसंघ के सुश्रावक हैं। वे संघ एवं संघपति के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित हैं। एक जागरूक एवं दायित्वशील कार्यकर्ता हैं। उन्होंने वर्षीतप की साधना के साथ-साथ मासखमण की तपस्या भी संपन्न की है यह अपने आपमें एक विरल सिद्धि है। मैं उनके भावी आध्यात्मिक जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करती हूं।

मासखमण की तपस्या संपन्न हीने पर तेयुप उधना के तत्वावधान में जैन संस्कार विधि संस्कारक अर्जुन मेड़तवाल, नेमीचंद कावड़िया एवं संजय बोथरा ने परिवार जनों की उपस्थिति में जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार के द्वारा उनकी सुदीर्घ तपस्या का पारणा करवाया। संस्कारकों ने उनकी विशिष्ट तप की अनुमोदना करते हुए वृहद मंगलपाठ सुनाया एवं शुभकामनाएं प्रेषित की।

कटक, उड़ीसा

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में प्रियंका मनीष दुगड़ के मासखमण तप की संपन्नता के अवसर पर तेरापंथी सभा द्वारा मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया।

मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म एक व्यापक दृष्टिकोण वाला धर्म है। इसका सार तत्त्व है—आत्मा की पवित्रता और उसका आधार है—तप। धर्म का प्रथम व आखिरी कदम है—तपस्या, तप परम कल्याणकारी, मंगलकारी और हितकारी होता है। जैनागम तप को मंगल मानता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि कटक में सावन मास में प्रियंका मनीष दुगड़ ने मासखमण तप कर अतुल मनोबल व अद्भुत साहस का परिचय दिया है। हम उनके तप की अनुमोदना करते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सन्मार्ग हिंदी पत्र के संपादक रामकिशन खंडेलवाल ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं तप अनुमोदना वक्तव्य तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष हनुमानमल सिंघी ने दिया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन तेमम की अध्यक्षा हीरा बैद ने व मासखमण तप अभिनंदन पत्र का वाचन महासभा कार्यकारिणी सदस्य मुकेश सेठिया ने किया।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष दिनेश जोशी, तेयुप के मंत्री मनीष सेठिया, मनोज दुगड़, साहिल धाड़ेवा, संतोष चांडक आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेमम, दुगड़ परिवार की कन्याओं ने गीत प्रस्तुत किए। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री चैनरूप चोरड़िया व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। तेरापंथी सभा, तेयुप, तेमम द्वारा तपस्वी व अतिथियों का सम्मान किया गया। मुनिश्री ने तपस्वी को मासखमण तप का विधिवत प्रत्याख्यान कराया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

कांदिवली (मुंबई)।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। उपस्थित शिविरार्थियों तथा जनसमूह को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि 'सुखमय का जीवन का स्त्रोत है—ध्यान। यह जीवन रूपांतरण की अनूठी प्रक्रिया है। गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ का यह मानवता का बड़ा उपकार है। ध्यान क्या? क्यों? व कैसे? इसका सुंदर विवेचन करते हुए साध्वीश्री जी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने तनाव प्रबंधन के सूत्रों की रोचक प्रस्तुति दी। साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत का संगान किया। इस शिविर में लायंस क्लब (वेस्ट जोन) के ४० संभागिबयों संग कुल १३७ व्यक्तियों ने भाग लिया। शिविर का शुभारंभ मंत्र प्रेक्षा के साथ हुआ, जिसे स्वास्थ्य केंद्र की संयोजिका विमला दुगड़ ने करवाया। परिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक शांतिलाल कोठारी ने आसन व यौगिक क्रियाएँ तथा वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारस दुगड़ ने कायोत्सर्ग के प्रयोग करवाए।

संयोजिका सायरा बैद ने कायोत्सर्ग के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक महत्त्व तथा डॉ० मनीषा परमार ने भोजन में संपोषक द्रव्यों की जानकारी दी।

स्वास्थ्य केंद्र के डायरेक्टर जयचंद सांखला, संयोजक राजेश बैद, अशोक कोठारी, ज्ञानचंद भंडारी, शांता देवी विमला पटेल परेश पटेल, संदीप पिंचा, गौतम डोसी आदि अनेक लोगों का श्रम रहा। शिविर को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, कांदिवली, मालाड़, गोरेगाँव व तेयुप-कांदिवली-मालाड़ का अच्छा सहयोग रहा। पारस दुगड़ द्वारा लिखित मुद्रा विज्ञान एवं रंग चिकित्सा का दसवाँ संस्करण तेरापंथी सभा, मलाड के अध्यक्ष इंदरमल कच्छारा एवं जयचंद सांखला ने साध्वीश्री जी को उपहृत किया। कार्यक्रम का संचालन पारसमल दुगड़ ने किया।

मानव में मानवीयता का भाव बना रहे

बालोतरा।

अणुव्रत समिति, बालोतरा के तत्त्वावधान में रक्षाबंधन के पर्व पर स्थानीय कारागृह में मानवीय मूल्यों की प्रेरणा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि जब तक व्यक्ति अपने गुस्से पर काबू नहीं कर पाएगा, तब तक अपराध कम नहीं होगा। हम जीवन में नशामुक्त रहें एवं अपने गुस्से पर कंट्रोल करना सीखें। जोश के साथ होश रहेगा तभी परिवर्तन संभव है। अणुव्रत हमें संयम सिखाता है।

मुनि जयेश कुमार जी ने कैदी भाइयों को प्रेरणा देते हुए अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा, उपाध्यक्ष संजय भंडारी, सहमंत्री मुकेश सालेचा, जेलर भवरसिंह चौहान, तेमम अध्यक्ष निर्मला संकलेचा सहित अन्य पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

दंपति कार्यशाला का आयोजन

कोटा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गुलाबबाड़ी में वृहद दंपति कार्यशाला का आयोजन किया गया। 'हैप्पी कपल-खुशियाँ डबल' कार्यक्रम में साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जीवन रथ के दो मजबूत चक्र हैं—पति व पत्नी। दांपत्य जीवन में सरसता हो, मधुरता हो और समरसता हो। इस त्रिवेणी में अभिस्नात कपल हैप्पी कपल बन सकता है। उसके जीवन में दोगुनी नहीं सौगुनी खुशियाँ आ सकती हैं।

पति-पत्नी के जीवन में, उनके संबंधों में घनिष्ठता रहे, सकारात्मक सोच का सहज संयोग हो। जहाँ स्नेह, समर्पण, शक्ति, सद्भावना होगी, वहाँ सर्वत्र आनंद का वर्षण होगा।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता चेन्नई से समागत अंतर्राष्ट्रीय मोटीवेटर राकेश खटेड़ ने हैप्पी कपल के टिप्स बताते हुए कहा कि हर दंपति समता का संवर्धन करे, शक्ति का प्रस्फोटन करे एवं आनंद के शिखर का स्पर्श करे। पति-पत्नी एक-दूसरे को कोमप्लीमेंट देने के लिए विलंब न करें, किंतु कंप्लेन चौबीस घंटे बाद करें। थैंक्यू एवं सॉरी समय-समय पर जरूर कहें। ऐसा करने से संबंधों में खुशहाली रहेगी। संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी।

साध्वी कनिकाश्री जी ने कहा कि दांपत्य जीवन की खुशहाली का सबसे बड़ा मंत्र है—विश्वास। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने संचालन किया।

साध्वी समत्वयशा जी ने गीत का संगान किया। साध्वी सुधाप्रभाजी ने 'बेस्ट कपल-ज्ञानवान कपल' रोचक प्रतियोगिता करवाई। सभाध्यक्ष संजय बोथरा ने स्वागत किया। ग्यारह वरिष्ठ जोड़ों ने मंगल संगान कर पूरी परिषद को भावविभोर कर दिया। तेरह युवा जोड़ों ने गीत की मनमोहक प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री धर्मचंद जैन ने किया।

✦ *तात्त्विक ज्ञान देना, किसी को चित्तसमाधि पहुँचाना, यह भी सेवा का ही कार्य है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला दिवस के कार्यक्रम

विद्याधर नगर, जयपुर

ज्ञानशाला गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की समाज को एक अभिनव देन है। उगती पौध को सत्संस्कारों से आप्लावित करके समाज में नई जागृति लाने का पूज्यप्रवर श्री का उद्देश्य था।

महासभा के निर्देशन में ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ एवं साधु-साध्वियाँ प्रशिक्षण देकर संस्कारी बच्चों का निर्माण करते हैं तथा गुरुदेव का स्वप्न साकार करते हैं। शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस पर साध्वी मधुयशा जी द्वारा बच्चों को संवाद, कव्वाली, समुह गीत, प्रश्न-उत्तर आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

साध्वी मधुयशा जी ने पूरा श्रम तथा समय लगाकर बच्चों को तैयार किया। बच्चों ने सुंदर कार्यक्रम की प्रस्तुति देकर सभी से शुभ आशीष प्राप्त किया। सभा के सहमंत्री सुरेंद्र सेखानी, तेयुप के मंत्री अविनाश छाजेड़, महिला मंडल की मंत्री रेखा बोकड़िया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका प्रीति पारख ने बच्चों को शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम का संचालन रेखा लुणिया ने किया। इस असर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि बच्चों को संस्कारी बनाने का गुरुदेव श्री तुलसी तथा आचार्यश्री महाश्रमण जी की दूरदर्शिता की सोच का परिणाम है। बच्चे संस्कारी बनकर अच्छे परिवार, समाज तथा देश का निर्माण कर सकते हैं। अच्छा बच्चा अच्छा श्रावक बनकर धर्मसंघ को सेवा देकर कृतज्ञता का अनुभव करता है तथा आचार्यप्रवर के सपनों को साकार करने में अहम भूमिका निभाता है।

कोलकाता

वृहद कोलकाता दक्षिण बंगाल की ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानशाला दिवस उत्तर हावड़ा, सभा के तत्त्वावधान में साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में मनाया गया। आंचलिक संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया और लगभग ५०० लोगों की उपस्थिति थी तथा ४६ ज्ञानशालाओं के बच्चों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

उत्तर हावड़ा सभा, महिला मंडल, तेयुप आदि सभी का अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन क्षेत्रीय संयोजिका सुजाता दुगड़ ने किया। कार्यक्रम के निर्णायक थे कोलकाता सभा के निवर्तमान अध्यक्ष बुद्धमल एवं उपाध्यक्ष अशोक लुनिया।

बच्चों की प्रस्तुति प्रशंसनीय थी एवं पूरा कार्यक्रम सुंदर व सुचारु रूप से संपन्न हुआ। सभी सभा-संस्थाओं के पदाधिकारी, प्रशिक्षिकाएँ, पूरी टीम कार्यकारिणी सदस्य मालचंद, सह-संयोजक संजय कार्यक्रम की संयोजिका बबीता तातेड़ इस कार्यक्रम एवं अभिभावकों का विशेष सहयोग रहा।

अररिया कोर्ट

स्थानीय तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों के द्वारा एक रैली निकाली गई। तत्पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। कार्यक्रम में महिला मंडल अध्यक्षा ज्योति बोथरा, ज्ञानशाला आंचलिक सह-संयोजक सचिन दुगड़, स्थानीय ज्ञानशाला संयोजक पंकज बोथरा, मुख्य प्रशिक्षिका माला छाजेड़ ने अपना वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बच्चों के द्वारा एक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन कविता बोथरा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए ज्ञानार्थियों एवं अभिभावकगण उपस्थित थे।

अमराईवाड़ी-ओढव

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के निर्देशन में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में अमराईवाड़ी-ओढव ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला दिवस मनाया। ज्ञानार्थियों ने शुभारंभ मंगलाचरण गीत से किया। प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका का संगान किया।

शासनश्री साध्वी सरस्वतीजी ने कहा कि ज्ञानशाला भावी पीढ़ी में सुसंस्कार देने वाला उपयोगी उपक्रम है। बचपन में प्राप्त सुसंस्कारों की लौ जीवन भर अमिट रहती है। साध्वी संवेगप्रभाजी सभी अभिभावकों और बच्चों को ज्ञानशाला में भेजने के लिए प्रेरणा दी और ज्ञानशाला में सेवा देने वाले सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

साध्वी नंदिताश्री जी ने बच्चों को नई पौध और प्रशिक्षकों को कुशल माली बनाकर ज्ञानशाला के संचालन की प्रेरणा दी। साध्वी तरुणप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से बच्चों को अधिक से अधिक ज्ञानार्जन के लिए प्रेरित किया।

ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका सेजल मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए आभार ज्ञापन लक्ष्मी सिसोदिया ने किया। ज्ञानार्थी लाव्या ने भी मनमोहक प्रस्तुति दी। बच्चों की रैली भी निकाली गई।

राजलदेसर

ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव छापर में गुरुदेव के सान्निध्य में मनाया गया। राजलदेसर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला दिवस पर छापर में गुरुदेव के सान्निध्य में उपस्थित होकर अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। नन्हीं बाल पीढ़ी को आचार्यश्री ने पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए लोगों को अपनी इस भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित बनाने का मंगल प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर ज्ञानशाला प्रशिक्षिका निर्मला जैन, हेमलता घोषल, मोनिका बैद के नेतृत्व में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गुरुदेव के समक्ष 'सुनो न मम्मी डैडी, सब जाते हैं ज्ञानशाला----' के माध्यम से सुंदर प्रस्तुति दी।

'खोलो ज्ञान का पिटारा' कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में टीपीएफ, हैदराबाद के तत्त्वावधान में 'खोलो ज्ञान का पिटारा' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, डी०वी० कॉलोनी में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नवकार मंत्र के मंगलाचरण से हुआ।

टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद ने सभी का स्वागत किया एवं सभी टीम को शुभकामनाएँ दी। उन्होंने साध्वीवृंद के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित की।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य है कि लोग जैन धर्म को अच्छे से जान सकें और अपना आत्मकल्याण कर सकें।

साध्वी रश्मिप्रभाजी ने प्रतियोगिता में प्रश्नोत्तरी का संचालन किया। कुल १२ टीमों ने इसमें भाग लिया एवं प्रत्येक टीम में ७ सदस्य थे। कार्यक्रम के आयोजन में साध्वीश्री जी का पूर्ण मार्गदर्शन रहा।

प्रथम तीन टीम के सभी सदस्यों को टीपीएफ द्वारा पुरस्कृत किया गया। टीपीएफ के कार्यक्रम संयोजक मोक्षा सुराणा, वर्षा बैद, निखिल कोटेचा, अर्हम् बैंगाणी एवं शिखा सुराणा ने इसे सफल बनाने में अथक प्रयास किया। अरिहंत गुजरानी, प्रकाश दफ्तरी एवं हैदराबाद कन्या मंडल ने इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्रदान किया। आभार ज्ञापन टीपीएफ मंत्री सुनील पगारिया ने किया।

✦ *आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

सुर-संगम ग्रांड फिनाले का आयोजन

मुंबई।

तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई के तत्त्वावधान में सुर-संगम ग्रांड फिनाले का आयोजन तेरापंथ भवन, कांदिवली में साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में हुआ। मंगलाचरण अंधेरी महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। अंधेरी महिला मंडल की संयोजिका शशि लोढ़ा ने सभी का स्वागत किया।

महिला मंडल की अध्यक्ष रचना हिरण ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि २०२३ आचार्यश्री महाश्रमण जी के मुंबई आगमन को ध्यान में रखते यह सुर-संगम का आयोजन किया गया।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभाजी ने सुर-संगम ग्रांड फिनाले के लिए पूरी टीम को साधुवाद दिया। महिला मंडल मंत्री अलका मेहता ने अपने भाव व्यक्त किए।

सुर-संगम ग्रांड फिनाले के प्रथम राउंड देशभक्त गीत का प्रारंभ हुआ। जिसमें चयनित १३ टीम ने प्रस्तुति दी। प्रथम राउंड का संचालन प्रतिभा बैद ने किया।

दूसरे राउंड जिसमें स्वरचित स्वागत गीतों की थीम थी, उसमें सभी ने एक से बढ़कर एक गीतों की प्रस्तुति दी। द्वितीय राउंड का संचालन सहमंत्री सरोज सिंघवी ने किया।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने सभी के लिए आध्यात्मिक मंगलकामना की व मुंबई महिला मंडल के इस कार्य को सराहा। मदन तातेड़ व विनोद बोहरा ने अपने विचार रखे तथा मुंबई महिला मंडल को साधुवाद देते हुए कहा कि स्वागत गीत हेतु इन १३ टीमों का चयन निश्चित है।

म्यूजिक डायरेक्टर ललित सेन ने कार्यक्रम की संयोजना के लिए बधाई दी व १३ धुनों को बनाने का वादा किया। कविता सेठ ने अपनी मधुर आवाज में गीत की प्रस्तुति दी व सफलतम कार्यक्रम की बधाई दी। मीनाक्षी भूतोड़िया ने अपनी आवाज से सभी को मंत्रमुग्ध किया। विराग मधुमालती ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ को समर्पित गीत प्रस्तुत करते हुए तेमम, मुंबई को सुंदर आयोजना के बधाई दी। सभी टीम की सुंदर प्रस्तुति रही।

१३ टीम की ६३ बहनों की शानदार प्रस्तुति दी, जिसमें प्रथम–खारघर टीम, द्वितीय अंधेरी टीम, तृतीय बदलापुर व प्रोत्साहन भांडुप टीम रहे।

इस सुर-संगम ग्रांड फिनाले में अभातेमम ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़, अभातेमम पूर्वाध्यक्ष कुमुद कच्छारा, पूर्व महामंत्री तरुणा बोहरा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

सुर-संगम सेमीफाइनल को सफल बनाने हेतु संयोजक भारती सेठिया, विमला सेखानी, सरोज सिंघवी, सुमन मेहता व प्रतिभा बैद का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन मुंबई कार्यकारिणी से सुमन मेहता ने किया तथा प्रायोजक तेमम अंधेरी व श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा। मुंबई के सभी क्षेत्रों से लगभग ११०० से भी ज्यादा बहनों की उपस्थिति रही।

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को दिया बढ़ावा

इंदौर।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर अणुव्रत क्रिएटिविटी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पर्यावरण का संरक्षण, दायित्व हमारा हर क्षण विषय पर दो चरणों में प्रतियोगिता हुई। नई पीढ़ी में रचनात्मकता व सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रतियोगिता हुई। कोठारी कॉलेज में हुए प्रथम चरण में गायन प्रतियोगिता में ३० स्कूलों के ३५० बच्चों ने भाग लेकर पुरस्कार जीते।

बॉस्केटबॉल कॉप्लेक्स में दूसरे चरण में चित्रकला, लेखन व भाषणों के द्वारा बच्चों ने पर्यावरण संरक्षक को लेकर अपनी भावनाएँ व्यक्त की। इसमें ११०० स्कूली बच्चों ने भाग लिया। अणुव्रत समिति अध्यक्ष निलेश पोरवाल ने बताया कि प्रतियोगिता साध्वी कार्तिकयशा जी के सान्निध्य व पद्मश्री पर्यावरणविद डॉ० जनक पलटा, कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्र के आतिथ्य में संपन्न हुई। आयोजन में समिति की प्रांतीय प्रभारी साधना कोठारी, स्वप्निल कोठारी, गौतम कोठारी, दीपक जैन, भारत पारख, श्रद्धा बैद आदि का योगदान रहा।

'रिश्तों की डोर, ना हो कमजोर' विषयक सेमिनार का आयोजन

माधावरम, चेन्नई।

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में जैन तेरापंथ नगर, माधावरम, चेन्नई में 'रिश्तों की डोर ना हो कमजोर' विषय पर सेमिनार का आयोजन तेरापंथी सभा ट्रस्ट के तत्त्वावधान में किया गया।

मुनि सुधाकर जी ने कहा कि आज छोटी-छोटी बातों पर तकरार और टकरार होने लगती है, जिससे सात फेरों का संबंध भी बंधन की जंजीर बनकर जीवन की बाधा बन जाता है। रिश्ते की खटास जीवन को त्रास बना देती है। पति-पत्नी के मध्य में अविश्वास, अहम, वहम एवं संदेह सात फेरों के संबंध को भी दुश्मनी में बदल देता है। मुझे तुम पर विश्वास है, यह भाव एक-दूसरे के प्रति रहना चाहिए।

मुनिश्री ने कहा कि आपस में संवाद करें विवाद नहीं, वार्तालाप करें, विलाप नहीं एक-दूसरे के प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद का भाव रखें। रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए समन्वय, सामंजस्य, संतुलन एवं सहनशीलता के भाव का विकास जरूरी है।

मुनि नरेश कुमार जी ने कहा कि दांपत्य जीवन की सुगमता और शुद्धता के लिए वाणी का विवेक जरूरी है। महासभा के अध्यख मनसुखलाल सेठिया ने कहा कि रिश्तों के लिए कहना, सुनना, सहना एवं रहना सीखें।

स्वागत स्वर प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने दिया। महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत, आंचलिक प्रभारी ज्ञानचंद आंचलिया ने विचार रखे। छल्लाणी बहनों ने मंगलाचरण किया। सेमिनार के संयोजक प्रवीण सुराणा ने संचालन करते हुए सबका धन्यवाद किया।

इस अवसर पर महासभा और अन्य संघीय संस्थाओं के अनेकों प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। ट्रस्ट बोर्ड द्वारा अनुदानदाताओं का सम्मान किया गया।

वृक्षारोपण व सेवा कार्य

रायगढ़।

अणुव्रत समिति, मुंबई के अंतर्गत उपसमिति रायगढ़ जिला परिषद की एक स्कूल के प्रागंण में ४५ पौधे लगाकर वृक्षारोपण किया गया। साथ ही अणुव्रत बुक बैंक प्रोजेक्ट के अंतर्गत बच्चों की उच्च शिक्षा हेतु अणुव्रत विद्यार्थी एवं शिक्षक नियम के स्टिकर लगाकर २ कम्प्यूटर वितरित किए। विभाग प्रभारी सीमा बाबेल ने उपस्थित सभी बच्चों और शिक्षकों को अणुव्रत की जानकारी दी और विद्यार्थी और शिक्षकों को नियम पढ़ अपने भीतर उतारकर पालन करने का प्रयास करने के लिए कहा।

अणुव्रत के ११ नियम और अणुव्रत के कार्यों को सुनकर स्कूल के प्रबंधन और टीचर्स ने अणुव्रत समिति की प्रशंसा की और रोपे गए वृक्ष की देख-रेख करने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम में विभाग प्रभारी सीमा बाबेल, जितेंद्र बाबेल, आशीष मेहता, पंकज सोनी, कृष्ण जैन, दर्पण जैन, समृद्धि जैन के साथ रोटरी क्लब ऑफ पनवेल एलीट के प्रेसिडेंट स्वाति लिखिते, सेक्रेटरी आदित्य जोशी व पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

आत्मशक्ति संवर्धन : सामायिक के साथ जप अनुष्ठान

विद्याधर नगर, जयपुर।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित आयाम—मैं हूँ सामायिक साधक के अंतर्गत आत्मशक्ति संवर्धन (सामायिक के साथ जप अनुष्ठान) का स्थानीय तेयुप के तत्त्वावधान में और शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में ॐ भिक्षु जय भिक्षु का जाप का उपक्रम तेरापंथ भवन विद्याधर नगर में रखा गया। इसमें विद्याधर नगरवासियों ने बहुत उत्सुकता से भाग लिया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

अमराईवाड़ी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा 'व्यक्तित्व विकास कार्यशाला' के अंतर्गत 'संघ का काम हो, संघ का नाम हो' कार्यशाला का आयोजन सिंघवी भवन में शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने नमस्कार महामंत्र से की। विजय गीत का संगान तेयुप की टीम द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा किया गया। स्वागत तेयुप के अध्यक्ष हेमंत पगारिया द्वारा किया गया। सभा की ओर से सभा के मंत्री गणपत हिरण ने सभी का स्वागत किया।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने अमराईवाड़ी, तेयुप के युवकों की तारीफ करते हुए कहा कि यहाँ की युवा शक्ति श्रद्धा, समर्पण, सेवा, संस्कार, संगठन के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक है। साध्वी संवेगश्री जी ने सभी के प्रति मंगलकामनाएँ की।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए अमराईवाड़ी परिषद की सराहना की एवं उन्होंने कहा कि यह परिषद भले ही संख्या की दृष्टि से कम है, लेकिन क्वालिटी में यहाँ कुछ दम है। उन्होंने दोनों प्रोविजनल सीपीएफ जोनल ट्रेनर के लिए भी मंगलकामनाएँ की। उन्होंने सुमधुर गीत द्वारा अपनी प्रस्तुति दी एवं साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

शाखा प्रभारी दीपक रांका ने पधारे हुए सभी का अभिनंदन करते हुए अमराईवाड़ी के कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। अभातेयुप सदस्य सतीश चोरड़िया ने भावना व्यक्त की।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के प्रभारी दिनेश बुरड़ ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की। तेयुप के पूर्व प्रभारी अपूर्व मोदी ने जिनकी आठ की तपस्या चल रही है। उन्होंने भी अपनी भावनाएँ व्यक्त की। अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक एवं अमराईवाड़ी के पूर्व प्रभारी मुकेश गुगलिया ने अमराईवाड़ी परिषद की सराहना करते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त की।

आभार ज्ञापन किशोर मंडल प्रभारी जयेश सिंघवी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मीडिया प्रभारी मुकेश सिंघवी ने किया। अंत में साध्वीश्री जी के मंगलपाठ के द्वारा कार्यक्रम का समापन किया गया।

✦ *श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

कानपुर।

प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन अभातेमम के निर्देशानुसार कानपुर तेमम द्वारा साध्वी डॉ० पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। तेमम ने मंगलाचरण किया। महिला मंडल की बहनें विनीता सेठिया और राजू सुराणा ने एक लघु नाटक की प्रस्तुति दी। इस नाटक के माध्यम से सभी श्रावकों को प्रतिक्रमण करने के महत्त्व को बताया।

साध्वी दीप्तियशा जी ने कहा कि हम अपनी मर्यादाओं का अतिक्रमण करके अपनी स्वभाव दशा में से निकलकर विभाव दशा में चले जाते हैं, तो पुनः स्वभाव रूप सीमाओं में प्रत्यागमन करना प्रतिक्रमण है। साध्वीश्री जी ने प्रतिक्रमण के सभी आवश्यक सूत्रों के बारे में बताया। साध्वीश्री जी ने पक्खी, चातुर्मासिक और संवत्सरी प्रतिक्रमण करने की प्रेरणा दी। स्वागत वक्तव्य महिला मंडल की अध्यक्षा शालिनी बुच्चा ने दिया। कार्यक्रम का संचालन ऋतु जैन ने किया।

अमृतम् ग्रंथ भेंट

दिल्ली।

भारत को विभिन्न धर्म संप्रदाय के धर्म गुरुओं द्वारा आशीर्वाद समारोह में जैन तेरापंथी सभा, दिल्ली के तत्त्वावधान में डॉ० समणी निर्देशिका मंजुप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ का प्रतिनिधित्व किया। समाज की तरफ से गुरुदेव की फोटो एवं अमृतम् ग्रंथ भेंट किया। भूतपूर्व राष्ट्रपति महोदय को समणीजी को बधाईयों के स्वर में कहा—आप लोगों के द्वारा देश की सेवाएँ हो रही हैं, यह प्रशंसनीय है। समणीजी ने गुरुदेव एवं तेरापंथ का मिशन बतलाकर उनके प्रति शुभकामना की।

इस अवसर पर तेरापंथ समाज के गणमान्य व्यक्तियों में दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, कमल बैंगानी, लक्ष्मीपत बोथरा, बाबूलाल दुगड़, सुशील जैन, अरविंद दुगड़, ईश्वर जैन, प्रेम सेठिया, कल्पना सेठिया, श्रुचि सेठिया, ललित गर्ग, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, अभिनंदन बैद आदि उपस्थित थे।

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

मुंबई, ठाणे।

शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस व स्वतंत्रता दिवस का आयोजन ठाणे में हुआ। ज्ञानार्थियों की रैली निकाली गई।

साध्वी मार्दवयशा जी ने मंगलभावना व महाप्रयाण ध्वनि का प्रयोग करवाया। साध्वी जिनरेखा जी ने बताया कि बच्चों को मानवीय प्रेरणा और इंसानियत के सच्चे गुण ज्ञानशाला से मिलते हैं। साध्वीवृंद ने गीतिका सुनाई।

स्वागत ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुनीता बाफना ने किया। स्वतंत्रता सेनानी थीम पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता रखी गई। प्रतिभा चोपड़ा ने सामायिक किट वितरित किए। ठाणे सभा उपाध्यक्ष महेंद्र पुनमिया, प्रचार मंत्री विनोद बड़ाला, तेयुप सेंट्रल अध्यक्ष सुभाष हिंगड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन वीणा सेठिया ने किया। संचालन अल्का श्रीमाल व खुशबू पामेचा ने किया।

मेमोरी टेस्ट प्रतियोगिता का आयोजन

सरदारपुरा, जोधपुर।

तेयुप, सरदारपुरा द्वारा मेघराज तातेड़ भवन में मेमोरी टेस्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में आयोजित हुए इस कार्यक्रम में २२ ग्रुप ने भाग लिया।

प्रतियोगिता संयोजक विकास चोपड़ा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में दो-दो प्रतिभागियों के ग्रुप बनाए गए, जिनसे साध्वी करुणाप्रभाजी द्वारा तुरंत बोले गए वाक्यों का पुनरावर्तन करा स्मरण शक्ति का टेस्ट किया गया। सह-संयोजक राजेश छल्लाणी व गौरव बरमेचा ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने उत्साह से भाग लिया और प्रथम स्थान सुमन भंडारी-अंकित भंडारी, द्वितीय स्थान महावीर चौधरी-विकास चौपड़ा, तृतीय स्थान पीयूष बैद-नेहा बैद व भारती बैद-सिद्धा संयुक्त रूप से प्राप्त किया।

गौरव बरमेचा ने बताया कि इस कार्यक्रम में विजेता प्रतिभागियों को तेयुप, सरदारपुरा द्वारा पारितोषिक प्रदान किया गया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेयुप, तेमम आदि के सदस्यों की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 अगस्त, 2022

✦ *ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की उपासना करनी चाहिए और विवेकशील व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

देश के विभिन्न क्षेत्रों में 4197 बच्चों ने ग्रहण की मंत्र दीक्षा

पूर्व में मंत्र दीक्षा ग्रहण कर चुके सैंकड़ों बच्चों ने भी अपने-अपने क्षेत्रों में आयोजित कार्यक्रमों में दर्ज कराई सहभागिता

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के असीम आशीर्वाद से अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में सम्पूर्ण भारत व नेपाल में **मंत्र दीक्षा संग वीतराग पथ कार्यशाला** का आयोजन हुआ| बच्चे वह मिट्टी के घड़े हैं जिनको पकने से पहले जिस रूप में ढाला जाए उसी रूप में वह ढल जाते हैं। बचपन से ही बच्चों में सुसंस्कार देना अतिआवश्यक है क्योंकि संस्कारों की सृजन के बिना बच्चे के जीवन का विकास नहीं कर सकते| संस्कार ही है जो बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाते है, बड़ों का आदर करना सिखाते हैं, धर्म के प्रति उनकी आस्था को दृढ़ बनाते हैं इसलिए हर साल अभातेयुप के निर्देशन में शाखा परिषदों द्वारा मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित होता है जिसका एकमात्र लक्ष्य है प्रत्येक बच्चे के जीवन मे श्रद्धा समर्पण त्याग की भावना जागृत हो| प्राप्त जानकारी के अनुसार इस वर्ष सम्पूर्ण भारत व नेपाल में मिलाकर 206 शाखा परिषदों के आयोजन में 224 शाखा परिषदों के बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की| इस बार आयु सीमा का विशेष ध्यान रखते हुए 4197 नए बच्चों को मंत्र दीक्षा दी गयी| सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करते हैं और आशा करते हैं कि इन आध्यात्मिक कार्यक्रमों से निश्चित ही हमारी भावी पीढ़ी की नींव मजबूत होगी|

क्र.सं.	परिषद् नाम	संभागी
1	कोच्ची	4
2	बेल्लारी	9
3	चिकमंगलूर	8
4	चित्रदुर्ग	2
5	गांधीनगर–बैंगलोर	150
6	एचबीएसटी (हनुमंतनगर)	50
7	हिरियुर	5
8	हुबली	17
9	मंड्या	14
	हासन	
	हुन्सुर	
10	मैसूर	17
11	नंजनगुड	4
12	राजाजीनगर	32
13	राजाराजेश्वरीनगर	18
14	सिंधनूर	2
15	टी. दासरहल्ली	18
16	विजयनगर	104
17	यशवंतपुर	15
18	इंदौर	5
19	झाबुआ	5
20	झकनावद	9
21	पेटलावद	24
22	रतलाम	15
23	ऐरोली–मुंबई	18
24	अंधेरी–मुंबई	17
25	औरंगाबाद	8
26	बांद्रा–मुंबई	8
27	भांडुप–मुंबई	11
28	भायंदर–मुंबई	15
29	भिवंडी–मुंबई	6
30	भुसावल	15
	अमलनेर	
	चालीसगाँव	
31	बोईसर–मुंबई	5
32	बोरीवली–मुंबई	20
33	चेंबूर–मुंबई	40
34	दादर–मुंबई	6
35	दहिसर–मुंबई	4
36	दक्षिण मुंबई	10
37	डोंबिवली–मुंबई	30
38	घनसोली–मुंबई	6
39	घाटकोपर–मुंबई	21
	विक्रोली–मुंबई	
	काजुपाड़ा–मुंबई	
	कुर्ला–मुंबई	
40	गोरेगांव–मुंबई	13
41	इचलकरंजी	58
	जयसिंगपुर	
42	जलगांव	8
43	जालना	27
44	जोगेश्वरी–मुंबई	14
45	कांदिवली–मुंबई	33
46	कांजुरमार्ग–मुंबई	5
47	खारघर–मुंबई	6
48	खार–मुंबई	6
49	कोपरखैरणे–मुंबई	9
50	मलाड–मुंबई	25
51	मीरा रोड़–मुंबई	12
52	मुलुंड–मुंबई	14
53	नागपुर	9
54	नालासोपारा–मुंबई	8
55	नेरुल–मुंबई	33
56	पालघर–मुंबई	8
57	पनवेल–मुंबई	3
58	पिंपरी चिंचवड़	2
59	पुणे	20
60	रत्नागिरि	4
61	साक्री	16
62	सांताक्रुज–मुंबई	30
63	शहादा	9
64	शिरपुर	8
65	सायन कोलीवाड़ा–मुंबई	5
66	सोलापुर	20
67	ठाणे–मुंबई	90
	कोपरी ठाणे–मुंबई	
	लोकमान्य नगर ठाणे–मुंबई	
	वागले एस्टेट ठाणे–मुंबई	
	सीबीडी बेलापुर–मुंबई	
68	वसई रोड़–मुंबई	12
69	वाशी–मुंबई	31
70	विक्रोली बुमखाना–मुंबई	5
71	विले पार्ले–मुंबई	4
72	विरार–मुंबई	10
73	गुलाबबाग	8
74	कटिहार	12
75	खुश्कीबाग	5
76	किशनगंज	40
77	निर्मली	12
78	पटना सिटी	10
79	दिल्ली	112
80	भिवानी	7
81	फरीदाबाद	4
82	गुरुग्राम	11
83	हिसार	11
84	जाखल मंडी	2
85	जींद	10
86	सिरसा	11
87	टोहाना	7
88	उचाना मंडी	2
89	अहमदगढ़	1
90	बरेटा मंडी	2
91	धुरी	5
92	जगराओं	1
93	लुधियाना	14
94	मंडी गोबिंदगढ़	1
95	मानसा	8
96	शेरपुर	5
97	सुनाम	3
98	दलखोला	19
99	हिंदमोटर	9
100	इस्लामपुर	7
101	लिलुआ	11
102	पूर्वांचल–कोलकाता	10
103	सिलीगुड़ी	18
104	दक्षिण हावड़ा	14
105	दक्षिण कोलकाता	7
106	टॉलीगंज	5
107	उत्तर हावड़ा	6
108	उत्तर कोलकाता	4
109	अजमेर	19
110	अकोला	3
111	आमेट	9
112	आसींद	28
113	बालोतरा	41
114	बाड़मेर	7
115	बायतु	7
116	भीलवाड़ा	58
117	भीम	24
118	भीनासर	42
119	बीदासर	16
120	बीकानेर	29
121	छापर	15
122	छोटी खाटू	7
123	चित्तौड़गढ़	5
124	चुरू	15
125	दौलतगढ़	4
126	देवगढ़–मदारिया	6
127	गंगापुर	18
128	गंगाशहर	25
129	हनुमानगढ़ टाउन	13
130	जयपुर	84
131	जसोल	41
132	जोधपुर	19
133	जोरावरपुरा	8
134	कालू	45
135	कांकरोली	90
136	केलवा	9
137	कोटा	9
138	लाछुड़ा	5
139	लुनकरणसर	25
140	मदनगंज–किशनगढ़	5
141	नोहर	3
142	नोखा	10
143	पचपदरा	15
144	पाली	40
145	पीलीबंगा	4
146	पुर	22
147	रेलमगरा	18
148	राजाजी का करेड़ा	1
149	राजलदेसर	7
150	राजगढ़	10
151	राजसमंद	56
152	सरदारपुरा (जोधपुर)	18
153	सरदारशहर	8
154	सवाई माधोपुर आदर्श नगर	10
155	शिशोदा	20
156	श्रीडूंगरगढ़	20
157	श्रीगंगानगर	10
158	सूरतगढ़	2
159	तारानगर	22
160	उदयपुर	31
161	उदासर	20
162	बंगोमुंडा	8
163	बेलपाड़ा	11
164	भुवनेश्वर	10
165	कटक	12
166	कांटाबाजी	22
	बलांगीर	
167	पटनागढ़ रामपुर	10
168	टिटिलागढ़	61
	भवानीपटना	
	केसिंगा	
	कुरसूड	
	तुसरा	
	उत्केला	
169	कानपुर	4
170	नोएडा	8
171	दुर्ग–भिलाई	7
172	जगदलपुर	9
173	रायपुर	13
174	चेन्नई	150
175	कोयंबटूर	2
176	मदुरै	12
177	सेलम	6
178	विल्लुपुरम	1
179	हैदराबाद	106
180	बिराटनगर	15
181	बीरगंज	8
182	धुलाबाड़ी	8
183	काठमांडू	27
184	विशाखापत्तनम	6
185	धुबड़ी	1
186	गुवाहाटी	25
187	खारुपेटिया	5
188	कोकराझाड़	3
189	सिलचर	10
190	अहमदाबाद	92
191	अमराईवाड़ी–ओढव	8
192	बारडोली	85
193	भुज–कच्छ	17
194	चलथान	10
195	डीसा	9
196	डूंगरी	10
197	गांधीधाम	40
198	कामरेज	80
199	खेड़ा	4
200	लिम्बायत	13
201	नवसारी	34
202	पर्वत पाटिया	12
203	सूरत	120
204	उधना	210
205	वडोदरा	12
206	वापी	65
		4197

*नोट:- विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित कार्यक्रमों में निर्धारित आयु सीमा के मंत्र दीक्षा ग्रहण करने वाले बच्चों की संख्या उक्त सूची में शामिल है।

दायित्व बोध कार्यशाला 'युवा शंखनाद' का भव्य आयोजन

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद अहमदाबाद द्वारा दिनाँक ७ अगस्त, २०२२ रविवार को गुजरात व मेवाड़ स्तरीय दायित्व बोध कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन शाहीबाग अहमदाबाद में आयोजित किया गया। जिसमें लगभग २६ परिषदों ओर अहमदाबाद परिषद के मिलाकर २०० संभागियो में भाग लिया

कार्यक्रम से पूर्व एमबीडडी की भव्य रैली का आयोजन किया गया जिसमें पूरे रास्ते में एमबीडीडी के होडिंग, बेनर ओर जनसैलाब से ऐसा लगा की एमबीडीडी आज ही है । तत्पश्चात मुनि कुलदीपकुमार जी के सानिध्य में कार्यशाला का प्रथम सत्र की शुभ शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गयी। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वांचन करते हुए कार्यशाला के शुभारंभ की विधिवत घोषणा की।

मुनिश्री ने सभी युवा साथियों को अपने अपने दायित्व से बोधित किया। मुख्य अतिथि अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने कहा मुनिश्री की प्रेरणा से पंद्रहरंगी तप हो रहा है उसमें सौभाग्य से मुझे भी आज उपस्थित होने का मौका मिला एवं सभी तपस्वी के तप की अनुमोदना की। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सुमधुर स्वर से सभी तपस्वी के तप की अनुमोदना की।

द्वितीय सत्र अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता मे प्रारंभ हुआ।उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने सेवा,सहमंत्री भूपेश कोठारी ने संस्कार, संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी ने संगठन पर युवाओं को अपना दायित्व समझाया, मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के सहप्रभारी सौरभ पटावरी ने एमबीडीडी की जानकारी दी एवं अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने तेयूप अहमदाबाद की ओर से सभी अभातेयुप पदाधिकारी, अभातेयूप सदस्य एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी संभागी का स्वागत अभिनन्दन किया ओर अपने प्रेरक विचारों से कार्यशाला में उपस्थित सभी संभागियो को उचित दिशानिर्देश प्रदान किये।

तृतीय सत्र में अभातेयुप संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी ने सभी संभागी को संगठन मंत्री के, अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी ने कोषाध्यक्ष एवं अभातेयुप उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री, सहमंत्री के क्या-क्या दायित्व है उसके बारे में विस्तृत जानकारी दी। अंत में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सभी संभागी के जिज्ञासाओं का समाधान किया

तेयुप अहमदाबाद के इस आयोजन की मुक्तकंठ से अध्यक्ष अरविंद संकलेचा के साथ साथ सभी पदाधिकारी, संयोजक, सहसंयोजक एवं समग्र तेयुप अहमदाबाद टीम की प्रशंसा की।

कार्यशाला के प्रायोजक परिवारों का परिषद द्वारा मोमेंटो से सम्मान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक उपाध्यक्ष कपिल पोखरना, संगठन मंत्री दीपक संचेती, सह-संयोजक आकाश भंसाली एवं दिलीप पारख की विशेष भूमिका रही। प्रथम सत्र का कुशल संचालन अभातेयुप सदस्य दिनेश बुरड एवं मंत्री दिलीप भंसाली ने किया । द्वितीय एवं तृतीय सत्र का संचालन मंत्री दिलीप भंसाली ने किया। कार्यक्रम के अंत मे सहमंत्री जय छाजेड़ ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

भौतिक ही नहीं आध्यात्मिक व नैतिक...

(पृष्ठ १६ का शेष)

आचार्यश्री ने इस संदर्भ में पावन आशीर्वाद प्रदान किया। इस दौरान प्रियंका कोठारी आठ की, कंचन कोठारी ११ की, संदीप चोरड़िया ने १५ की, दीपक मरोठी ने १६ की तथा रितू देवी ने आचार्यश्री से २६ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के अंतिम दिन पुरस्कार प्रदान समारोह में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आचार्य तुलसी समाज सेवा पुरस्कार वर्ष २०२०-२१ के लिए श्री भंवरलाल बैद व वर्ष २०२१-२२ डॉ० राजेश कुण्डलिया को प्रदान किया गया। वहीं मूविंग पिक्सल के सीएमडी मनीष बरड़िया को तेरापंथ विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के प्रशस्ति पत्र का वाचन क्रमशः महासभा के न्यासी हितेन्द्र मेहता व महासभा की उपाध्यक्ष सुमन नाहटा व महासभा के संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया ने किया। पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान किया।

मापन सत्र में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने श्रेष्ठ, उत्तम और विशिष्ट ११ सभाओं के नामों की घोषणा की और उन्हें आचार्यश्री के समक्ष पुरस्तुत भी किया गया। साथ ही सहयोगी सभाओं व महानुभावों को भी सम्मानित किया गया। महासभा के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि विश्रुतकुमारजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने किया।

गृहस्थ भी करे अपरिग्रह की दिशा...

(पृष्ठ १६ का शेष)

साधु के उपाधियाँ, कपड़े आदि अल्प रहें। साधु में असंग्रह की वृत्ति होनी चाहिए। थोड़ा संग्रह रखना। दूसरी बात है—अल्पेच्छा। साधु की अपेक्षाएँ थोड़ी होनी चाहिए। तीसरी बात साधु में अमूर्च्छा रहे। उपाधि है, उसमें मूर्च्छा न हो। साधु ये न बोले कि यह मेरी है। यह बोले कि यह मेरी निश्रा में है। चौथा शब्द बताया—अगृद्धि। खाते समय भी आसक्ति न हो। भोजन की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।

पाँचवाँ शब्द है—अपरिबद्धया। जो स्वजन है, ज्ञातिजन है, नातिले हैं, उनमें मोह नहीं रखना चाहिए। अवांछनीय रूप में मोह नहीं रखना चाहिए। श्रमण-निर्ग्रन्थ के लिए लाघव प्रशस्त है, अच्छा है। ये पाँचों चीजें श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए प्रशस्त है। ये पाँचों साधु की अपरिग्रह की चेतना से जुड़ी हुई चीजें हैं। मोह, ममता, मूर्च्छा इनसे साधु विरत रहेगा, तो साधु का साधुत्व निर्मल और अच्छा रह सकेगा।

हम गृहस्थों-श्रावकों को देखें, गृहस्थ भी परिग्रह कम रखें। ढलती उम्र में तो जितना परिग्रह कम हो सके, अच्छा है। गृहस्थ के लिए भी परिग्रह बंधन होता है। मेरापन-ममत्व कम हो। बारह व्रतों में पाँचवाँ व्रत 'इच्छा परिमाण' अपरिग्रह का ही रूप है। इच्छाओं का परिसीमन करें। सातवाँ व्रत है—उपभोग-परिभोग व्रत। भोगोपभोग की सीमा करें। सादगी और संयमपूर्ण जीवन आत्मा की दृष्टि से हितकर होता है। आत्मा में भारीपन नहीं आता है।

सादगी व अच्छे जीवन से आदमी कीमती बनता है। हमारा ज्ञान और हमारे विचार उसके अनुरूप हों। ये गहने भी भार है। हमारे गुणों के गहने अच्छे रहें। गृहस्थों का भी अपरिग्रह की दिशा में विकास हो, यह काम्य है।

परम पावन ने कालूयशोविलास आख्यान का विवेचन करते हुए फरमाया कि उदयपुर में मालवा के लगभग ६०० लोग पूज्यकालूगणी से मालवा पधारने की अर्ज करते हैं। कालूगणी ने कुछ आश्वासन मालवा के लोगों को दिया। मालवा की तरफ विहार भी किया। कानोड़ पधार भी जाते पर मालवा के लिए अंतराय आ जाती है। केलवा आदि मेवाड़ के क्षेत्रों में विचरण हो रहा है। वहाँ से मारवाड़ पधार रहे हैं। कांठा क्षेत्र में विचरण करा रहे हैं। पाली में मर्यादा महोत्सव हो रहा है। दीक्षा भी हुई है। सिवांची-मालाणी की यात्रा करवा रहे हैं। जोधपुर चतुर्मास के लिए पधार रहे हैं।

मुनि विकासकुमार जी ने सुदी तेरस पर गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
22 - 28 अगस्त, 2022

✦ *आदमी में धीरता, वीरता और गंभीरता रहे तो वह महान बन सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री ने महासभा को धार्मिक-आध्यात्मिक विकास करने का दिया आशीष

भौतिक ही नहीं आध्यात्मिक व नैतिक विकास भी करे भारत : राष्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के अंतिम दिन गुरु सन्निधि में प्रदान किए गए विभिन्न पुरस्कार

ताल छापर, १५ अगस्त, २०२२

भारत का ७६वां स्वतंत्रता दिवस। पूरा देश आजादी का ७५वां अमृत महोत्सव मना रहा है। ऐसे में चूरू जिले के छापर में वर्ष २०२२ का चतुर्मास कर रहे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में सोमवार प्रातः चतुर्मास प्रवास स्थल में चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति-छापर के तत्त्वावधान में तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने लोगों को पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। तदुपरान्त मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने आजादी के ७५वर्ष की सम्पन्नता के अवसर पर देशवासियों को पावन प्रेरणा प्रदान की। इस दौरान महासभा के तत्त्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन के अंतिम दिन भी प्रतिनिधियों को आचार्यश्री से पावन सम्बोध प्रदान हुआ। कार्यक्रम में महासभा द्वारा विभिन्न सेवा पुरस्कारों को भी प्रदान किया गया। इस अवसर पर पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री से उन्हें पावन आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आचार्य कालू महाश्रमण समवसरण में उपस्थित जनता व देशवासियों को अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, राष्ट्रसंत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्राधारित मंगल पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि दुनिया में नित्यता भी है और अनित्यता भी। सब कुछ दुनिया में नित्य नहीं है और अनित्य भी नहीं है। क्षण-क्षण परिवर्तन होता रहता है। पर्याय परिवर्तन होता रहता है, किंतु स्थिरता भी है। कोई स्थिर है, तो फिर उसमें परिर्वन हो सकेगा? स्थिर कुछ है ही नहीं तो परिवर्तन होगा किसके?

तीन शब्द बताए गए हैं—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य। तत्त्व वह है जो उत्पन्न होता है, जिसमें विनाश भी होता है और तत्त्व वह जो ध्रुव, शाश्वत होता है। आत्मा शाश्वत है। प्रत्येक प्राणी की आत्मा अतीत काल में थी, आज भी है और आगे भी हमेशा रहेगी। आत्मा के असंख्य प्रदेश हैं, वे स्थिर हैं। आत्मा के टुकड़े नहीं किए जा सकते। यह आत्मा की स्थिरता है।

जीव कभी मनुष्य रूप में है, कभी देव, तिर्यंच या नारक के रूप में है, यो जीव में उसके पर्याय का परिवर्तन होता रहता है। इस तरह अस्थिर भाग में परिवर्तन होता है, स्थिर भाग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जीव का अजीव बन जाए ये कभी नहीं हो सकता। कारण जीवत्व का अंश है, वह स्थिर है। हमारा मन स्थिर भी है और अस्थिर भी है। कितनी चंचलता हमारे मन में हो जाती है। आज १५ अगस्त है। १५ अगस्त, १९४७ को देश को स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई थी। यहां पर्याय के परिवर्तन की बात सिद्ध होती है कि आज भारत की आजादी का ७५वां वर्ष पूर्ण हो गया और इसके साथ अमृत महोत्सव का कार्यक्रम भी जुड़ गया। हालांकि हम लोगों में शायद कितने लोग होंगे जिन्होंने देश को आजाद होते हुए देखा होगा। हमारे गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी ने वह वक्त देखा था। उन्होंने लोगों को असली आजादी अपनाओ की प्रेरणा दी। देश के नागरिकों व देश में भौतिक और आर्थिक विकास होना भी आवश्यक है, किन्तु उसके साथ आध्यात्मिकता और नैतिकता का भी विकास होता रहे, तो पूर्णता की बात हो सकती है।

भारत ऋषि प्रधान ही नहीं, ऋषि प्रधान देश भी है। भारत का मानों सौभाग्य है कि इस धरती पर कितने-कितने ऋषि-संत भ्रमण करते हैं। प्राचीन ग्रंथों से सुन्दर पाथेय प्राप्त हो सकता है। आजादी के ७५ वर्ष की सम्पन्नता की बात है। इसमें पूर्वावलोकन भी किया जा सकता है। भारत निरंतर आध्यात्मिक, नैतिकता और सौहार्द की दिशा में आगे बढ़े। भारत लोकतांत्रिक प्रणाली वाला देश है। स्वतंत्रता तो एक उपलब्धि है। स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं, बल्कि अनुशासनबद्ध रहने का प्रयास होना चाहिए। राग, द्वेष, हिंसा, घृणा से बचाव हो और प्रमाणिकता, अहिंसा, संयम व नैतिकता का विकास हो।

आज तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन का अंतिम दिन है। महासभा खूब आध्यात्मिक-धार्मिक विकास करती रहे। क्षेत्रीय सभाएं भी अपने यहां तेरापंथ भवन में शनिवार की सामायिक आदि के माध्यम से निरंतर धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों को संचालित करते रहें।

कार्यक्रम में स्वतंत्रता दिवस के संदर्भ में साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। आचार्यश्री की अष्टवर्षीय अहिंसा यात्रा पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण महासभा के पदाधिकारियों द्वारा पूज्यचरणों में किया गया। (शेष पृष्ठ १५ पर)

आचार्य तुलसी सेवा पुरस्कार ग्रहण करते हुए क्रमशः महासभा के पूर्व प्रधान न्यासी भंवरलाल बैद व डॉ० राजेश कुंडलिया

तेरापंथ विशिष्ट प्रतिभा पुरस्कार ग्रहण करते हुए मनीष बरड़िया

गृहस्थ भी करे अपरिग्रह की दिशा में विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १० अगस्त, २०२२

अप्रमत्त महासाधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिए लाघव प्रशस्त है क्या? उत्तर दिया गया कि श्रावक-निर्ग्रन्थों के लिए लाघव प्रशस्त है, बहुत अच्छी है।

श्रमण-निर्ग्रन्थ जो अपरिग्रह के साधक हैं। उनकी न तो रुपये, पैसे से न अपने मकान से, न कोई जमीन होती है। गृहस्थ और साधु में एक बड़ा अंतर यह है कि आमतौर से गृहस्थ परिग्रही होता है और साधु अपरिग्रही होता है। साधु को अणगार कहा गया और गृहस्थ को सागार कहा गया है। गृहस्थ यानी घर में रहने वाला। जैन साधु का कहीं परिग्रह नहीं होना चाहिए। साधु के तो ज्ञान-दर्शन मेरा है। परिग्रह की चीजों के साथ साधु का संबंध नहीं होना चाहिए। (शेष पृष्ठ १५ पर)

❑ **अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स की प्रति डाक द्वारा निःशुल्क मँगवाने के लिए अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी 9480048066 पर व्हाट्सएप करें।**

❑ **तेरापंथ टाइम्स ऑनलाइन पढ़ने के लिए एवं पी०डी०एफ० डाउनलोड करने के लिए पर www.terapanthtimes.com लोगइन करें।**

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**